खण्ड-343, अंक-1
बुधवार, 3 माघ, शक संवत् 1901
(23 जनवरी, 1980 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 343 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1980

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय				पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	..	..	..	1–5
विविध विषय	..	..	..	5–6
श्री राज्यपाल के अभिभाषण का श्री उपाध्यक्ष द्वारा आँशिक पाठ			..	6
लोक नायक जयप्रकाश नारायण के निधन पर शोकोद्गार	..		..	7–12
भूतपूर्व सदस्य, श्री वंशगोपाल शुक्ल, श्री रामजी, डाक्टर पद्मपत सिंघानिया, डाक्टर हरि प्रसाद शाही तथा श्री रामस्वरूप यादव के निधन पर शोकोद्गार				13–17
सदन को कल स्थगित करने की सूचना	..	..	..	18
नत्थी	..	..	..	19–26

विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बुधवार, दिनांक 23 जनवरी, 1980

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 12.30 बजे दिन में उपाध्यक्ष श्री जगन्नाथ प्रसाद की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य —384

अकबर हुसैन, श्री
अजब सिंह, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
अजब सिंह, श्री (जिला सहारनपुर)
अजीत सिंह सेठी, श्री
अठई राम, श्री
अनवार अहमद समदनी, श्री
अब्दुल वहीद, श्री
अब्दुल हफीज, श्री
अब्दुल हलीम खां, श्री
अरुण कुमार, श्री
अली असगर हुसैन, श्री
अवधेश कुमार श्रीवास्तव, श्री
अवधेश नरायन, श्री
अवधेश प्रसाद, श्री
अवनीश कुमार सिंह, श्री
अशफाक अहमद, श्री
अशफाक अहमद खान, श्री
अशर्फी लाल यादव, श्री
अशोक बाजपेयी, श्री
अश्वनी कुमार चतुर्वेदी 'राकेश', डाक्टर
आबिद अली, श्री
इन्द्रमणी बड़ौनी, श्री
समाईल, श्री
शदत्त यादव, श्री
ईश्वर प्रसाद, श्री
उदय नारायण सिंह, श्री
उदय प्रताप सिंह, श्री
उदित नरायन, श्री
उमा कान्त बाजपेई, श्री (उर्फ भइया जी)
ऊदल, श्री
एदल सिंह, श्री
ए0 सी0 ग्राइस, श्री
ओंकार नाथ, श्री
ओंकार सिंह, श्री
ओम प्रकाश सिंह, श्री
औसान सिंह, श्री
कन्हई सिंह, श्री
कन्हैया लाल गुप्त, श्री
कन्हैया लाल सोनकर, श्री
कमल किशन पाण्डेय, श्री
कमला प्रसाद वर्मा, श्री
कमला प्रसाद सिंह, श्री
करन सिंह, श्री
कल्पनाथ सिंह, श्री
कल्याण सिंह, श्री
काली चरण, श्री
कासिम हसन, श्री
किशन लाल, श्री
किशन लाल दिलेर, श्री
कुदसिया बेगम, श्रीमती (बेगम ऐजाज रसूल)
कृपा शंकर आर्य, श्री
कृष्ण कान्त मिश्र, श्री
कृष्ण कुमार पालीवाल, श्री
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर
कृष्ण स्वरूप, श्री
कृष्णा राय, श्री
केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री
कैलाश नाथ सिंह, श्री
कौशल किशोर, श्री
खान गुफरान जाहिदी, श्री
खान मोहम्मद आतिफ खां, श्री
ख्याली राम शास्त्री, श्री
गंगा प्रसाद, श्री
गंगा सहाय यादव, श्री
गंजी प्रसाद, श्री
गजाधर प्रसाद, श्री
गजेन्द्र सिंह, श्री
गणेश दत्त बाजपेयी, श्री
गिरधारी लाल, श्री
गिरीश चन्द्र तिवारी, श्री
गुन्जेश्वर, श्री
गुरुदत्त सोलंकी, श्री
गुरु प्रसाद, श्री
गुलाब सेहरा, श्री
गेन्दा लाल गुप्त, श्री
गोकरन प्रसाद, श्री

गोविन्द सिंह नेगी, श्री
गोविन्द सिंह मेहरा, श्री
गौरी देवी, श्रीमती
गौरी शंकर एडवोकेट, श्री
गौरी शंकर भैया, श्री
चन्द्र पाल, श्री
चन्द्र पाल सिंह, श्री
चन्द्र भान मौर्य, श्री
चन्द्र भूषण सिंह, श्री
चन्द्र शेखर सिंह, श्री
चन्द्रसेन सिंह, श्री
चेतराम गंगवार, श्री
चौधरी नौनिहाल सिंह, श्री
छज्जू सिंह, श्री
छेदा सिंह चौहान, श्री
छेदी, श्री (उर्फ छेदीलाल)
छोटे लाल, श्री
छोटे लाल 'निर्भय', श्री
जंग बहादुर सिंह पटेल, श्री
जगदम्बा प्रसाद सिंह, श्री
जगदीश, श्री
जगदीश प्रसाद, श्री
जगदीश प्रसाद त्रिवेदी, श्री
जगदीश सिंह, श्री
जगन्नाथ प्रसाद, श्री
जगन्नाथ सिंह, श्री
जगन्नाथ सिंह परमार, श्री
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री
जमुना प्रसाद, श्री
जयराम, श्री
जय शंकर पाण्डेय, श्री
जवाहर लाल, डाक्टर
जसवीर सिंह, श्री
जागन सिंह, श्री
जागेश्वर, श्री
जौहरी लाल त्रिवेदी, श्री
ज्ञानेन्द्र स्वरूप, श्री
झामलाल अहेरवार, श्री
डी० पी० बोरा, श्री
तेजभान सिंह, कुंवर
तेज सिंह, श्री
त्रिवेनी सिंह, श्री
दयाराम भास्कर, श्री
दशरथ सिंह, श्री
दिनेश चन्द्र रस्तोगी, श्री
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री
दीप नरायन, श्री
दुक्खी प्रसाद, श्री
दुर्ग विजय सिंह, श्री
देवकी नन्दन, श्री
देव कुमार, श्री
देवबहादुर सिंह, श्री
देवराम, श्री
देवेन्द्र दत्त शास्त्री, श्री
धरम राम, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री (जिला बिजनौर)
नंगा राम, श्री
नन्दराम, श्री
नन्हेंलाल कुरील, श्री
नरेन्द्र सिंह, श्री
नरेश चन्द्र, श्री
नरेशपाल सिंह यादव, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायण सिंह, श्री
नारायण सिंह भैंसोरा, श्री
नेतराम सिंह, श्री
नेम सिंह चौहान, श्री
पद्माकर लाल श्रीवास्तव, श्री
पुरुषोत्तम दास, श्री
पूरन चन्द्र, श्री
पूरन लाल, श्री
प्यारे लाल, श्री
प्यारे लाल शाक्य, श्री
प्रताप सिंह यादव, श्री
प्रताप सिंह 'पुष्पवान', श्री
प्रभू दयाल यादव, श्री (एडवोकेट)
प्रेम नारायण अहेरवार, श्री
प्रेमवती, श्रीमती
फजलुर्रहमान अन्सारी, श्री
फजलुलबारी, श्री (उर्फ बन्ने भाई)
बंगाली सिंह, डाक्टर
बच्चा पाठक, श्री
बदन सिंह, श्री
बनारसी दास, श्री
बनारसी दास चान्दना, श्री
बरफियालाल जुवाँठा 'अरविन्द', श्री
बलदेव, श्री
बलवीर सिंह, श्री (जिला मेरठ)
बलवीर सिंह, श्री (जिला मैनपुरी)
बशीर अहमद, श्री
बसन्त, श्री
बाँके लाल, श्री

बाबू बदरे, श्री
बाबूराम प्रभाती, डाक्टर
बाबूराम वर्मा, श्री
बाबू राम शुक्ल, श्री
बाबू लाल वर्मा, श्री
बाबू लाल विद्यार्थी, श्री
बाबू लाल 'सरोज', श्री
बाबू सिंह, श्री (जिला अलीगढ़)
बाबू सिंह, श्री (जिला मुजफ्फरनगर)
बिन्दू लाल, श्री
बिहारी लाल हन्स, श्री
बुद्धू राम, श्री
बृज बल्लभ सिंह, श्री
बृज लाल, श्री
बैचू राम, श्री
बेनी प्रसाद माधव, श्री
बेनी प्रसाद वर्मा, श्री
ब्रज बल्लभ, श्री
ब्रह्म दत्त द्विवेदी, श्री
भगवत दयाल, डाक्टर
भगवती चरण 'निर्मोही', श्री
भगवती प्रसाद सिंह, श्री
भगवानदीन कुशवाहा, श्री
भगवान सिंह, श्री
भगौती सिंह, श्री
भाभी, श्री
भारत सिंह, श्री
भीमा प्रसाद, श्री
भीषम, श्री
मंगल देव, श्री
मकबूल अहमद, श्री
मथुरा प्रसाद पाण्डेय, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मन्जूर अहमद, श्री
मन्जूर अली खां, श्री (उर्फ शन्न् खां)
मन्जूर अहमद, श्री
मन्ना लाल, श्री
मन्नू राम, श्री
मन्नू लाल द्विवेदी, श्री
मन्सूर अली, श्री
मलिक मोहम्मद कमाल यूसुफ, श्री
मलिखान सिंह, श्री
मसूदुल हसन नोमानी, श्री
महेन्द्र सिंह यादव, श्री
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री
मान सिंह आजाद, श्री
माधव, श्री
मालती शर्मा, श्रीमती
मिठाई लाल, श्री
मित्रसेन, श्री
मुकन्दी सिंह, श्री
मुकीमुर्रहमान, श्री
मुख्तार अनीस, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुनीन्द्र पाल सिंह, श्री
मुफ्ती जलील अहमद, श्री
मुलायम सिंह यादव, श्री
मुश्ताक अहमद, श्री
मुहम्मद खलील उल्लाह कुरैशी, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मूल चन्द्र, ठाकुर
मैनेजर सिंह, श्री
मोअज्जिज अली बेग, डाक्टर
मोती राम, श्री
मोती लाल देहलवी, श्री
मोहन लाल, श्री
मोहन लाल त्रिपाठी, श्री
मोहन सिंह, श्री (जिला देवरिया)
मोहम्मद उसमान, श्री
मोहम्मद शमीम अन्सारी, श्री
मौजी लाल कुरील, श्री
मौजी लाल कुरील, श्री
यशपाल सिंह, श्री
रघुवर दयाल वर्मा, श्री
रणजीत सिंह, श्री
रणजीत सिंह 'जूदेव', श्री
रणवीर सिंह, श्री
रफी उल्लाह, श्री
रफीक अहमद खां, श्री
रमा शंकर कौशिक, श्री
रमेश चन्द्र, श्री
रवीन्द्र नाथ तिवारी, श्री
राघव राम मिश्र, श्री
राज किशोर तिवारी, श्री
राज कुमार शर्मा, श्री
राजनाथ सिंह, श्री
राजपति मिश्र, श्री
राजबली तिवारी, श्री
राज ब्रजराज सिंह, श्री
राजमंगल तिवारी, श्री
राज मंगल पाण्डेय, श्री
राजेन्द्र चौधरी, श्री

राजन्द्र कुमार गुप्त, श्री
राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री
राजेन्द्र सिंह, श्री
राजन्द्र सिंह यादव, श्री
राधश्याम शर्मा, श्री
राम अधार, श्री
राम अधार यादव, श्री
राम आसरे, श्री
राम आसरे अग्निहोत्री, श्री
राम आसरे वर्मा, श्री
रामकृष्ण, श्री
राम गोबिन, श्री
राम चरन शाह, श्री
राम जनम, श्री
रामजी, श्री
राम दत्त जोशी, श्री
राम दयाल, श्री
राम दुलारे, श्री
राम देव दुबे, श्री
राम देव यादव, श्री
राम नरायन वर्मा, श्री
राम नरेश पाण्डेय, श्री
रामनरेश यादव, श्री
रामपति, श्री
राम प्यारे, श्री
राम प्रकाश, श्री
राम फेर कोरी, श्री
राम बक्श, श्री
राम बरन वर्मा, श्री
राम रतन सिंह, श्री
राम रति देवी, श्रीमती
राम लखन, श्री
राम लखन दूबे, श्री
राम शिरोमणि दुबे, श्री
रामसजीवन, श्री
राम सागर, श्री
राम सिंह, श्री
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री
राव मुश्ताक अहमद खाँ, श्री
रियासत हुसन, श्री
रेवती रमण रस्तोगी, श्री
रेवतीरमण सिंह, श्री (उर्फ मणि जी)
रेवती शरण मौर्य, श्री
लक्खी सिंह, श्री
लक्ष्मण सिंह, श्री
लक्ष्मी नरायन, श्री
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लाल दास, श्री
लीलवत सिंह, श्री
वंश गोपाल चतुर्वेदी, श्री
विक्रमा राय, श्री
विजय राज सिंह, श्री
विद्या शंकर, श्री
विमला राकेश, श्रीमती
विश्वनाथ पाण्डेय, श्री
वीरेन्द्र चतुर्वेदी, श्री
वीरेन्द्रपति यादव, श्री
शंकर सिंह, श्री
शकुन्तला नायर, श्रीमती
शतरुद्र प्रकाश, श्री
शफीकुर्रहमान बर्क, श्री
शमशाद अहमद, हाजी
शम्भूनाथ, श्री
शम्भूनाथ चौधरी, श्री
शशि प्रभा, श्रीमती
शारदा देवी, श्रीमती
शारदा प्रसाद जायसवाल, श्री
शारदा प्रसाद रावत, श्री
शारदा भक्त सिंह, श्री
शिवदास, श्री
शिव प्रसाद, श्री
शिव मंगल सिंह, श्री
शिव लाल मित्तल, श्री
शिवानन्द नौटियाल, श्री
शोबन सिंह जीना, श्री
श्याम दत्त पालीवाल, श्री
श्याम देव, श्री
श्याम घर मिश्र, श्री
श्याम नारायन तिवारी, श्री
श्याम बिहारी सिंह, श्री
श्याम सुन्दर गुप्त, श्री
श्रीचन्द्र, श्री
श्रीनारायण, श्री (उर्फ मुलई भाई)
श्रीराम द्विवेदी, श्री
संगम लाल, श्री
संग्राम सिंह, श्री
सखावत हुसैन, श्री
सच्चिदानन्द, श्री
सत्यदेव त्रिपाठी, श्री
सत्यपाल सिंह यादव, श्री
सत्य प्रकाश, श्री
सत्यवीर, कुंवर

सन्त बक्श रावत, श्री
सियाराम सागर,श्री
सुखद राज सिंह, श्री
सुखपाल पाण्डेय, श्री
सुदामा प्रसाद गोस्वामी, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दर लाल, श्री
सुन्दर लाल दीक्षित, श्री
सुमेर चन्द गोयल, श्री
सुरेन्द्र कुमार कालरा, श्री (सिन्धु)
सुरेन्द्र पाल, श्री
सुल्तान सिंह, श्री
सूबेदार प्रसाद, श्री
सूरज प्रसाद, श्री
सूरवीर सिंह, श्री
सूर्यमुखी शर्मा, श्रीमती
सूर्यनाथ उपाध्याय, श्री
सोहन वीर सिंह तोमर, श्री
सोहन लाल, श्री
हरगोविन्द सिंह, श्री
हरदेव सिंह, श्री
हर प्रताप सिंह, श्री
हरिपाल सिंह शास्त्री, श्री
हरिश्चन्द्र, श्री (उर्फ हरीश जी)
हरि किशन श्रीवास्तव, श्री
हरि चरण यादव, श्री
हरी राम वर्मा, श्री
हरी राम शाक्य, श्री
हरी सिंह, श्री
हाकिम लाल, श्री
हामिद रजा खां, श्री
हिम्मत सिंह, श्री
हुकम चन्द तिवारी, श्री
हुक्म सिंह परिहार, श्री

नोट—हरिजन एवं समाज कल्याण मन्त्री श्रीमती चन्द्रावती तथा नियोजन राज्य मन्त्री श्री महीपाल सिंह शास्त्री भी सदन में उपस्थित थे ।

विविध विषय

(काला झण्डा दिखाते हुए)

श्री मन्जूर अहमद (जिला मेरठ)—

इनके जमाने में छपरौली में वोट नहीं पड़ा ।

श्री उपाध्यक्ष— (शोर)

कृपया बैठें ।

श्री मान सिंह आजाद (जिला लखनऊ)—

[× × ×] (शोर)

श्री उपाध्यक्ष—

आप बैठिए। आप किसके आदेश से बोल रहे हैं ?

यह कार्यवाही का अंश नहीं बनेगा ।

सूचना राज्य मन्त्री (श्री सत्यदेव त्रिपाठी)—

मान्यवर, सदन के सामने काले झण्डे का प्रदर्शन सदन का अपमान है। यह घटना सदन के सामने हुई है। इसलिए विशेषाधिकार की नोटिस माननीय मन्जूर अहमद के खिलाफ उठा रहा हूं ।

श्री उपाध्यक्ष—

ऐसा कभी नहीं हुआ कि सदन में झण्डे दिखाए गए हों। इसलिए मैं इसको अनुचित समझता हूं ।

श्री गुलाब सेहरा (जिला आगरा)— (शोर)

मान्यवर, मुझे केवल इतना निवेदन करना है कि यह जो सदन बुलाया गया है, यह सरकार अल्प मत में है । इसके हाथ हरिजनों के खून से सने हुए हैं । इस सरकार को कोई अधिकार नहीं है शासन करने का। इसने मतदाताओं को मत देने से वंचित किया है। इससे ज्यादा अन्याय क्या हो सकता ह ? (शोर)

नोट—[×××]यह अंश श्री उपाध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

लाठी और बन्दूक के जोर पर वोट डलवाए गए। इस सरकार को कतई शासन करने का अधिकार नहीं है।

(शोर)

श्री उपाध्यक्ष—

सदन में कृपया शान्ति रखें, कृपया बैठिए।

मैं पहले महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का पहला पैरा और अन्तिम पैरा पढ़ कर सुना देता हूं।

श्री गुलाब सेहरा—

[× × ×]

(शोर)

श्री उपाध्यक्ष—

माननीय सेहरा जी, आप कृपया अपना स्थान ग्रहण करें, यह कार्यवाही का अंश नहीं बनेगा।

(व्यवधान)

(कांग्रेस (आई०) दल के सदस्य सदन से उठकर चले गए।)

श्री राज्यपाल के अभिभाषण का श्री उपाध्यक्ष द्वारा आंशिक पाठ

श्री उपाध्यक्ष—

"माननीय सदस्यगण, नव वर्ष के प्रथम सत्र के अवसर पर एकत्र आप लोगों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं। विगत 8 अक्तूबर, 1979 को काल के क्रूर हाथों ने हमारे मध्य से लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण को छीन लिया। आदरणीय लोकनायक एक महान स्वतन्त्रता सेनानी तथा युगदृष्टा थे। वह सम्पूर्ण जीवन मानवीय अधिकारों के लिए लड़ते रहे। लोकतन्त्र में उनकी अटूट आस्था थी। सत्ता का लोभ उन्हें कभी स्पर्श नहीं कर सका। प्राचीन भारतीय ऋषियों की परम्परा में वह राष्ट्रपिता के समान सत्ता पर नैतिक नियन्त्रण रखना चाहते थे . . . .

श्री शतरुद्र प्रकाश (जिला वाराणसी)—

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री उपाध्यक्ष—

मैंने इसको शुरु कर दिया है, समाप्त कर दूं पहले।

"उन्होंने सदैव राज्य सत्ता और जनता के बीच एक सेतु का कार्य किया। उनकी मृत्यु से हुई क्षति की पूर्ति करना असम्भव होगा। मैं उस महान युग पुरूष के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

माननीय सदस्यगण, आने वाला समय बड़ा कठिन है। मुझे आशा है कि आप सब कटिबद्ध होकर प्रदेश के सर्वांगीण विकास में अपेक्षित सहयोग प्रदान करेंगे। लोकतांत्रिक सिद्धान्त में अटूट विश्वास के साथ जनता के प्रति अपने कर्तव्यों को तत्परता से निभाने में आप सफल हों, इसकी मैं कामना करता हूं।

जयहिन्द"

(श्री राज्यपाल के अभिभाषण के लिए देखिए नत्थी 'क' आगे पृष्ठ 19–26 पर)

नोट [X X X] यह अंश श्रीउपाध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

लोक नायक जयप्रकाश नारायण के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मन्त्री (श्री बनारसी दास)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, काल के क्रूर हाथों द्वारा लोक नायक श्री जयप्रकाश नारायण को 8 अक्तूबर, 1979 को हमसे छीन लिया गया। लोक नायक भारतवर्ष के सामाजिक और राजनीतिक नक्षत्रों में एक ज्वाजल्यमान तारे थे। उनका समस्त जीवन बचपन से मृत्यु पर्यन्त राष्ट्र के लिए समर्पित था। उनका जन्म 1902 में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में सितावदियारा में हुआ था। उनकी माता का नाम श्रीमती फूलवती और उनके पिता का नाम श्री हरसू दयाल जी था। सन् 1919 में हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करने के बाद आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए 1922 में अमेरिका गए। वहाँ पर अपने अध्यवसाय, पुरुषार्थ और परिश्रम से यू0 एस0 ए0 के विभिन्न विश्वविद्यालयों में उन्होंने एम0 ए0 तक की शिक्षा प्राप्त की। उस वक्त भारतवर्ष में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता संग्राम शुरु हो गया था। साबरमती का जो ऐतिहासिक डाँडी मार्च महात्मा गाँधी ने किया, जय प्रकाश जी उन सत्याग्रहियों में से एक थे। 1932 के आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया और लम्बे अर्से तक जेल के अन्दर रहे। "अंग्रेजो भारत छोड़ो" के आन्दोलन में महात्मा गाँधी के साथ वह उस आन्दोलन के प्रेरणा स्त्रोत थे और स्वतन्त्रता संग्राम में वह महात्मा गाँधी के साथ काफी समय तक रहे। उस समय दो मत थे—देश को नाजी शक्तियों से खतरा है, क्या इस वक्त अंग्रेजों के विरुद्ध भारत छोड़ो आन्दोलन करना उचित होगा? महात्मा गाँधी इस मत के थे कि इस वक्त देश की रक्षा के लिए और देश में आत्मविश्वास और साहस पैदा करना आवश्यक है। जब कि अंग्रेजों ने हमको बन्दी बनाकर विदेशी सत्ता की श्रृंखलाओं में जकड़ कर रखा है, इसलिए आज राष्ट्र का कर्तव्य है कि हम "अंग्रेजों भारत छोड़ो" का नारा लगायें। श्री जय प्रकाश नारायण व आचार्य नरेन्द्र देव इसके प्रबल समर्थक थे।

सन् 1940 में सत्याग्रह शुरु होने से पहले उनको गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन 1942 शुरू होने पर हजारी बार जेल से एक योजनाबद्ध तरीके से वह जेल से बाहर निकले और उन्होंने 1942 के आन्दोलन में पूरे तरीके से देश के अन्दर नेतृत्व किया। लाहौर किले में उनको तरह-तरह की यातनायें दी गयीं और बरफ की सिल्लियों पर लिटाया गया जब देश आजाद हुआ, तब वह इस देश में समाजवादी आन्दोलन के संगठन में लग गये। जब वह 1932 में पूना जेल में थे तब श्री अशोक मेहता, आचार्य नरेन्द्र देव, डा0 लोहिया के परामर्श से वहाँ पर काँग्रेस समाजवादी पार्टी की नींव पड़ी और 1934 में श्री जय प्रकाश नारायण उसके महामन्त्री बने और भारतवर्ष में विधिवत् उन्होंने समाजवादी आन्दोलन को शुरू किया। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद वह एक प्रमुख समाजवादी नेता रहे और 1953 के बाद उन्होंने अपना सारा जीवन आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में भूदान के लिए समर्पित कर दिया। तमाम देश में आचार्य विनोबा भावे के साथ मिलकर उन्होंने भूदान की गंगा देश में प्रवाहित की।

जय प्रकाश जी को 1974 में उनकी पत्नी के निधन से बड़ा आघात पहुंचा और तबसे उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। उस समय देश की जो परिस्थितियाँ थीं उसमें उन्होंने उचित समझा कि सर्वोदय आन्दोलन से हटकर देश में लोकतांत्रिक शक्तियों को बल देने के लिए उनके नेतृत्व की आवश्यकता है। इसलिए 1974 में उन्हीं के नेतृत्व में पटना में एक विशाल प्रदर्शन हुआ। सन् 1975 में जबकि हमारे देश में अधिनायकवाद के काले बादल छाए थे और जिससे आशंका थी कि यह हमारे देश की लोकतांत्रिक पद्धति को अधिग्रहण करने वाला है, उस समय जय प्रकाश जी के नेतृत्व में लोकतन्त्र की रक्षा के लिए

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री बनारसी दास]

सभी दलों को संगठित करने का आवाहन किया गया और दिल्ली के अन्दर एक महान प्रदर्शन हुआ। जय प्रकाश बाबू ने राष्ट्रपति को एक ज्ञापन भेंट किया। 25 जून, 1975 को देश की आजादी छीन ली गयी। श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा लोकतन्त्र की हत्या करके देश को जेलखाना बना दिया गया। उनके नेतृत्व में तमाम देश के जो विरोधी दल थे वह एक हो गये और जैसे महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हिन्दुस्तान ने आजादी हासिल की उसी प्रकार बाबू जय प्रकाश के नेतृत्व में यह दूसरी आजादी हासिल की गयी। इस प्रकार इस देश के अन्दर पुनः लोकतन्त्र की स्थापना की गयी।

बाबू जयप्रकाश जी जिस समय चण्डीगढ़ में बंदी थे उस समय उनका स्वास्थ्य खराब हो गया था और जेल से छूटने के बाद निरन्तर वह मृत्यु से संघर्ष करते रहे। मृत्यु शैय्या पर रह करभी वहदेश के प्रेरणा स्रोत थे और यहाँ की जो परिस्थितियाँ और समस्यायें थीं उनसे वह बराबर चिन्तित रहते थे। अन्त में 8 अक्तूबर, 1979 को काल के क्रूर हाथों ने उनको हमसे छीन लिया। लेकिन आज भी उनका संदेश और उनका जो संघर्षमय जीवन था वह हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा। युवकों के लिये जिस प्रकार वह युवक सम्राट होकर तमाम देश में नेतृत्व करते रहे और उन्होंने जो नयी चेतना पैदा की वह देश के लिये एक आदर्श रहेगा। श्रीमन्, मैं उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाँजलि भेंट करता हूं और आशा करता हूं कि यह देश उनके पदचिन्हों पर चलकर उनकी सेवाओं का सदा ऋणी रहेगा। उन्होंने निःस्वार्थ सेवा का व्रत लिया और सत्ता से सदा वह विमुख रहे। उनका एक मात्र लक्ष्य था कि सत्ता पर नैतिक नियंत्रण रहे, ऐसे व्यक्ति हों जिससे सत्ता का दुरुपयोग न हो। ये आदर्श जो महात्मा गाँधी ने दिखाये थे, जिनका अनुकरण बाबू जयप्रकाश ने जीवन भर किया, वे हम सबको एक प्रकाश स्तम्भ की तरह से हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

श्रीमन्, मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि उनके सम्मान में कल यह सदन बन्द रखा जाय और उनके प्रति पुनः मैं अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं यह नहीं मानता हूं कि उनका परिवार केवल रक्त से सीमित ह, उनका परिवार तो विशाल है। जो उनके अनुयायी साथी थे और हम सभी उनके अभिन्न अंग हैं। इसलिये हम सभी उनके प्रति समवेदना प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

*श्री राज मंगल पाँडेय (जिला देवरिया)—

मान्यवर, नेता सदन ने जो भावनायें अपने महान नेता और ऐसा नेता जिसको कि इस धरती माता ने उन महान शक्तियों में एक पैदा किया, जिसको काल के क्रूर हाथों ने हमसे छीन लिया, उनके प्रति जो समवेदना प्रकट किया है उससे हम अपने को और अपने दलो को सम्बद्ध करते हुए मैं चाहूंगा कि हम लोगों की समवेदना भी उनके परिवार तक पहुंचा दें।

मान्यवर, जय प्रकाश बाबू उन महान् व्यक्तियों में थे जिनका जीवन शुरू से ही संघर्षमय था। किस तरीके से उन्होंने 17 वर्ष की आयु में हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करके मेरिट स्कालरशिप हासिल किया और उसके तीन वर्ष के बाद अमेरिका में भिन्न-भिन्न यूनिवर्सिटियों में आठ वर्ष तक रोजागार करके उन्होंने तमाम डिग्रियाँ वहाँ पर हासिल कीं, यह एक संघर्षमय जीवन की ही बात है। अमेरिका में उन्होंने अपना जीवन-यापन किस तरीके से किया उसमें उन्होंने श्रम को महत्व दिया। जिस मनुष्य के जीवन में श्रम का महत्व नहीं है उसे समाजवादी कहने का कोई अधिकार नहीं है, यह बात उन्होंने साबित की थी।

---

*वक्ता ने भाषण का पनर्वीक्षण नहीं किया।

मान्यवर, 11 अक्तूबर, 1902 को सितावदियारा, जिला बलिया में जय प्रकाश बाबू पैदा हुए और जब-जब महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अंग्रेजों के साथ असहयोग आन्दोलन करने की बात रही चाहे वह असहयोग डाँडी मार्च रहा हो, 'भारत छोड़ो' आन्दोलन रहा हो, इस देश की जनता के प्रति जो अपना आत्म विश्वास दिखाकर इस देश की आजादी में जो अपनी भूमिका अदा की वह जब तक भारत का इतिहास रहेगा तब तक स्मरणीय रहेगा।

उनके जीवन से हर नौजवान ने एक सबक सीखा है । उन्होंने यह सिखा दिया कि जब तक हम गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहेंगे तब तक हमारा विकास नहीं हो सकता। वह गुलामी से लड़ते रहे। एक तरफ जहाँ महात्मा गाँधी के साथ आजादी के लिए लड़े दूसरी तरफ जिस तरीके से श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने 25 जून, 1975 को आपातकाल की घोषणा करके इस देश को गुलाम बनाया उस गुलामी से स्वतंत्र करने का श्रेय हमारे जय प्रकाश बाबू को जाता है ।

मान्यवर, उनके विचारों से यह देश बड़ा प्रभावित रहा है । इस देश के क्रिमिनल भी जिनके हाथ क्रूर हत्याओं से रंगे थे उनके जीवन से प्रभावित हुए। जब-जब उन्होंने अपनी विचारधाराओं से समाज और देश को प्रभावित किया तो अन्य देशों को भी उन्होंने अपनी विचारधाराओं से प्रभावित किया।

मान्यवर, अपनी पत्नी प्रभावती की मृत्यु से वह अपने जीवन में एकाकीपन महसूस करने लगे और उसके बाद निरंतर उन्होंने अपने स्वास्थ्य से संघर्ष किया। 8 अक्तूबर, 1979 को मृत्यु के क्रूर हाथों ने उनको हमसे छीन लिया। उनके विचारों ने हमको और हमारे देश को प्रभावित किया और उन्होंने बहुत सी किताबें भी लिखीं। समाजवाद के प्रति, किसानों के प्रति, देश की विभिन्न समस्याओं के बारे में उन्होंने बहुत किताबें लिखीं। ऐसे व्यक्ति के निधन पर कोई भी इस देश में ऐसा नहीं होगा जो यह महसूस नहीं करेगा कि हमारे बीच से एक महान व्यक्ति उठ गया है, जिसकी शून्यता को कोई पूरा नहीं कर सकेगा।

मान्यवर, हम अपनी दल की तरफ से नेता सदन की भावनाओं से अपने को साथ रखते हुए आपके माध्यम से चाहते हैं कि उनके परिवार तक हमारी भावनायें पहुंचा दें।

*श्री गुलाब सेहरा (जिला आगरा)—

श्रीमन्, राष्ट्र के एक महान् पुत्र के निधन पर जो विचार नेता सदन ने और विरोधी दल के नेताओं ने व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

श्रीमन, जय प्रकाश जी ने आजादी की लड़ाई के दिनों में चाहे वह डाँडी यात्रा रही हो, चाहे नमक सत्याग्रह रहा हो, स्वतंत्रता की लड़ाई में अपने आप को पूरी तरह से झोंक दिया था क्रान्तिकारी विचारधाराओं के वह प्रतीक रहे हैं। गाँधी जी के गाँधीवाद को वह मूर्त रूप में भारतवर्ष में देखना चाहते थे। इस संदर्भ में उन्होंने पार्टी के महामंत्री पद को ग्रहण किया। इसके साथ-साथ आजादी के बाद उन्होंने अन्त्योदय क्रान्ति को नवजवानों के हृदय तक पहुंचाया और 1975 में इस सिलसिले में उन्होंने आन्दोलन करके समाजवाद को मूर्त रूप देने के लिये अन्त्योदय की योजना का आवाहन नवजवानों को दिया जिस कल्पना को वह करते थे—गरीब-अमीर की खाई को वह पाटना चाहते थे, उसको वह मूर्त रूप देना चाहते थे और उसके लिए उन्होंने समस्त विरोधी दल के लोगों को जनता पार्टी के रूप में संगठित किया। बड़ी मधुर कल्पना थी जय प्रकाश जी की कि इस देश में पूरी तौर से समाजवाद लागू हो और अन्त्योदय लागू हो और इस कल्पना को साकार करने के लिये उन्होंने जनता पार्टी को संगठित किया। लेकिन निधन के पूर्व मैंने अखबारों में पढ़ा कि जिस समाज के निर्माण के लिये उन्होंने आन्दोलन किये थे और कल्पना की थी, नवयुवकों को क्रान्ति की राह पर लगाया था, जब उसको मूर्त रूप देने का वक्त आया,

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री गुलाब सेहरा]

तब जनता पार्टी का विभाजन हो गया जिससे आखिरी दिनों में उनको बड़ी पीड़ा रही। उस समय वह बीमार थे, रोग शैय्या पर थे जनता पार्टी के विभाजन से उनको सबसे ज्यादा पीड़ा हुई। मैं तो यह कहना चाहता हूं, श्रद्धांजलि के इस अवसर पर कि राष्ट्र का यह महान सपूत और अधिक दिन जीवित रहता अगर उनकी कल्पना को यह आघात न लगता .... (व्यवधान) यह आघात जिसकी ओर से भी लगा हो बहरहाल उनके अन्तिम दिन बड़ी पीड़ा के साथ गुजरे और जिस बात की कल्पना थी आखिरी दिनों में वह ध्वस्त हुई और उनकी उस कल्पना को ठेस लगी। लेकिन मैं इतनी बात अवश्य कहूंगा कि राष्ट्र के इस महान सपूत ने गरीब, पिछड़े तथा पद दलित लोगों के उत्थान के लिये जिस क्रान्ति का आवाहन किया था वह प्रेरणा का स्रोत इस संसार तथा देश में सदैव बना रहेगा।

मैं अपने और अपने दल को जो नेता सदन ने भावना व्यक्त की है और जो भावना विरोधी दल के नेता ने व्यक्त की है, उससे सम्बद्ध करता हूं और आप से आग्रह करता हूं कि जय प्रकाश जी के निधन की समवेदना हमारी ओर से, जितने भी उनके अनुयायी हैं, जितने भी उनके श्रद्धालु हैं तथा उनके परिवार के लोग है उन तक पहुंचाने का कष्ट करेंगे।

*श्री ऊदल (जिला वाराणसी)---

मान्यवर, श्री जय प्रकाश नारायण के निधन पर जो विचार नेता सदन तथा नेता विरोधी दल ने व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने व अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। आदरणीय जय प्रकाश नारायण जी स्वतंत्रता संग्राम के महान् सपूतों में से थे जिसका जिक्र माननीय नेता सदन ने किया। देश को स्वतंत्र कराने में उनकी बड़ी भूमिका रही है। वह अपनी धुन के बड़े पक्के थे। उनके निधन से काफी क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती। पुरानी पीढ़ी के लोग एक-एक करके इस तरह से उठते जा जा रहे हैं जिसकी पूर्ति अब असंभव है। इसलिये मैं अपनी ओर से अपने दल की ओर से स्वर्गीय जय प्रकाश नारायण जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आप से निवेदन करता हूं कि उनके जो अनुयायी हैं, उनके जो परिवार के लोग हैं, उनके भतीजे भी हैं उन सब तक हमारी समवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री लक्ष्मी शंकर यादव (जिला जौनपुर)---

मान्यवर, मैं अपने और अपने दल को माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, कांग्रेस (आई) के नेता तथा सी0पी0आई0 के नेता ने जो विचार प्रकट किये है उनसे सम्बद्ध करता हूं। बाबू जय प्रकाश नारायण का विश्वास समाजवाद में सबसे अधिक था। गांधीवाद में भी उनका विश्वास, मैं समझता हूं बहुत था। वे एक क्रान्तिकारी नेता थे। सत्ता के विषय में सोचते थे कि शासन कैसे चलाया जाय लेकिन यह तारीफ की बात है कि वे हमेशा सत्ता से अलग रहे। उनका विश्वास प्रजातंत्र में था साथ ही वे पंचायत राज को भी मजबूत बनाना चाहते थे। उनका सारा जीवन राजनीतिक होते हुए भी हरमाने में बड़े आदर्श का था। ऐसे राजनीतिक पुरुष जब उठ जाते हैं तो उनकी पूर्ति भविष्य में होना कठिन हो जाता है। मान्यवर, मैं चाहता हूं कि उनको सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यह होगी कि जिन विचारों को लेकर वे चले, जो उन्होंने हमें सिखाया, जो हमें प्रेरणा दी, जिस मार्ग पर वे हमें ले जाना चाहते थे उस पर हम सभी चलने की कोशिश करें और खास तौर से ऐस समय में जब आज देश की ऐसी परिस्थति हो गई है, वही उनके प्रति श्रद्धांजलि होगी और तभी उनकी आत्मा को शाँति मिलेगी। इन शब्दों के साथ मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आप हमारी तरफ से और हमारे दल की तरफ से यह समवेदना उनके परिवार को भेजने का कष्ट करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनवीक्षण नहीं किया।

श्री राम आसरे वर्मा (जिला हरदोई)—

मान्यवर, लोक नायक जय प्रकाश जी हमारे बीच नहीं रहे। उनके बारे में जो समवेदना माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने व्यक्त की है उसमें मैं स्वयं को और अपने प्रगतिशील विधायक दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि आप हमारी समवेदना उनके परिवार और अनुयायियों तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, लोक नायक जय प्रकाश जी का जीवन शुरू से लेकर आखिर तक एक सिपाही के रूप में, एक नेता के रूप में, एक पथ-प्रदर्शक के रूप में जिस रूप में भी हम देखना चाहें उसी रूप में देखने को मिलता है। शिक्षा का जीवन उनका उच्च रहा है, उसमें भी उन्होंने आदर्श उपस्थित किये हैं। 1930 में साबरमती से डांडी मार्च का अभियान गांधी जी ने चलाया था उसमें वे शामिल हुए थे। राजनीतिक क्षेत्र में भी भारत से अंग्रेजों को हटाने का जो आन्दोलन हुआ था उसमें भी उनका सहयोग अग्रणी रहा। सबसे बड़ी बात उनके जीवन के अन्तिम क्षणों की है जिसे कोई भी भारतीय नहीं भूल सकता है। जिन क्षणों में देश में भुखमरी, बेरोजगारी तथा भ्रष्टाचार की स्थिति आ गई थी, दिन-प्रति-दिन लोग यहां पर भूखों मर रहे थे, दमन के शिकार बनाये जा रहे थे उस हालत में लोक नायक जय प्रकाश जी उसे बर्दाश्त नहीं कर सके और उन्होंने उसके लिये संघर्ष किया। उनका कहना था कि जो देश में मानवीय मूल्यों की स्थापना करना चाहते हैं, जो गांधी जी के सपनों को साकार करना चाहते हैं वे एक साथ जुट कर कार्य करें। इस तरह से हमारे देश में एक नये अध्याय की शुरुआत हुई थी। लेकिन बदकिस्मती हम सबकी रही कि जहां उनके जिन्दा रहते जिस अध्याय की शुरुआत हुई थी उनके मरने के बाद वह अध्याय भी बन्द हो गया। जिन मोतियों को उन्होंने इकट्ठा किया था वह सारी मोतियां उनके मरने के पहले और फिर बाद में बिखर गयीं। ऐसी स्थिति में जब हम उस महान प्रतिभा के प्रति श्रद्धांजलि का संकल्प अर्पित करते हैं तो वह यही होगी कि जो रास्ता उन्होंने दिखाया था, जो मार्गदर्शन उन्होंने किया था उस पर हम चलते रहे। मैं कहना चाहूंगा कि उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि जो मोती बिखर गये हैं वह सब एक हो जायं। जिस समाजवाद के रास्ते को उन्होंने दिखाया था उसको पूरा करने के लिये संकल्पबद्ध हों, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

*श्री रियासत हुसैन (जिला मुरादाबाद)—

श्रीमन्, स्व0 जय प्रकाश जी आज हमारे बीच नहीं हैं। इस संबंध में नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य पार्टियों के नेताओं ने जो विचार प्रकट किये मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, जय प्रकाश जी का तमाम जीवन संघर्ष का प्रतीक रहा है, देश की आजादी के लिए जो संघर्ष हुआ और उसके बाद भी सामाजिक क्रांति के लिए उन्होंने संघर्ष किया और समाजवाद को मूल बनाकर देश के अन्दर एक नये समाजवाद की रचना का उन्होंने प्रयास किया। श्रीमन्, मैं तो आज भी जो अपने सर पर लाल टोपी पहने हूं वह पटना अधिवेशन में स्व0 जय प्रकाश जी ने ही रिवोल्यूशन की यादगार में दी थी और उसका उन्होंने इस्तेमाल किया था। मैं ज्यादा न कह कर यही कहना चाहूंगा कि श्री जय प्रकाश जी एक प्रतीक थे कि नि:स्वार्थ समाज सेवा कैसे होती है। वे प्रतीक थे कि नि:स्वार्थ होकर संघर्ष कैसे किया जाता है। वह इस बात के भी प्रतीक थे कि नि:स्वार्थ राजनीतिक मार्गदर्शन कैसे होता है। उनको ये तीनों चीजों के ही कारण देश के अन्दर जब-जब उनकी जरूरत हुई, उन्होंने देश की जनता का मार्गदर्शन किया। मैं उनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और अपनी तरफ से और सोशलिस्ट पार्टी की तरफ से प्रार्थना करता हूं कि उनके दुखी परिवार को आप यह समवेदना का प्रस्ताव भेजने की कृपा करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*श्री भगवती प्रसाद सिंह (जिला फैजाबाद)—

मान्यवर, श्री जय प्रकाश जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने जो विचार प्रकट किये हैं उनसे अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, स्व0 जय प्रकाश जी का जीवन ऐसा रहा है कि उसके कई हिस्से हैं। जब-जब देश में राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ उन्होंने उसमें हिस्सा लिया। जब अंग्रेजों का शासन था, उस समय और उसके बाद भी जब उनकी आवश्यकता हुई उन्होंने कदम आगे बढ़ाये और तब-तब उन्होंने कठिनाइयों का सामना किया। यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के बाद जब वह अमेरिका जा रहे थे तो वह सब अजीब समय था जिस के बारे में बेनीपुरी ने लिखा है कि वह बड़ी कठिनाइयों का समय था। ऐसे समय में उन्होंने अमेरिका में शिक्षा हासिल की। वहाँ से वापस आने के बाद उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया और देश के इतिहास में सबसे कठिनाई का समय था जिसका उन्होंने सामना किया। समाजवादी पार्टी की स्थापना में भी उनका स्थान अग्रणी रहा। बाद में समाजवादी पार्टी से अलग होने के बाद उनके दिल में बड़ी ठेस लगी और वह सर्वोदयी हो गये थे और उसके बाद वह देश के नागरिकों के प्रति और गरीबों के प्रति हमेशा जागरूक रहे और उनके दिलो दिमाग पर एक ठेस लगती रही है। उसका अंजाम था कि जब देश तानाशाही का शिकार रहा था और सारी स्थिति आजादी के बाद जो आई थी, वह खतम हो रही थी, तो उन्होंने अपने कदम को बढ़ाया। यह देश के लिए सबसे बड़े गौरव की बात है कि श्री जय प्रकाश नारायण की अगुवाई में, जब देश और विदेश में तानाशाही ने अपना विकराल रूप धारण कर लिया था देश लोकतंत्र की रक्षा करने में अग्रणी रहा। अपने जीवन के आखिरी दिनों में अपनी बीमारी की हालत में भी वह संघर्ष करते रहे। इन बातों को देखते हुए वह एक महान देशभक्त, निष्ठावान व संघर्षशील और देशप्रेमी रहे मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यह कामना करता हूं कि हम सभी लोगों को उनके पदचिन्हों पर चलने की सहायता मिले।

*श्री ए0 सी0 ग्राईस (नाम निर्देशित-आँग्ल भारतीय)—

मान्यवर, माननीय नेता सदन और नेता विरोधी दल ने अपनी जो भावना रखी है। मैं अपनी ओर से और अपनी पूरी क्रिश्चियन कम्युनिटी की ओर से उसमें शामिल हूं। हमारी पूरी कम्युनिटी ने जब वह बीमार हुए, उनकी लाइफ के लिए दुआ माँगी थी। हम यह मानते हैं कि वह वाकई हिन्दुस्तान में गाँधी जी के बाद एक मात्र सच्चे नेता थे।

श्री उपाध्यक्ष—

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, श्री गुलाब सेहरा, श्री उदल, श्री लक्ष्मी शंकर यादव, श्री राम आसरे वर्मा, श्री रियासत हुसैन, श्री भगवती प्रसाद सिंह और श्री ए0सी0 ग्राइस ने लोक नायक जय प्रकाश नारायण के बारे में जो विचार व्यक्त किये हैं, मैं अपने को और इस माननीय सदन को उससे सम्बद्ध करता हूं। श्री जय प्रकाश जी ने इस दश को आजाद कराया, समाजवादी विचारधारा का यहाँ सूत्रपात किया और गरीबों व भूमिहीनों के लिए बिनोबा जी के नेतृत्व में भूदान आन्दोलन में बहुत बड़ा हिस्सा लिया। यह प्रदेश सदैव उनका ऋणी रहेगा, उनके विचारों का ऋणी रहेगा। मैं आपके द्वारा व्यक्त श्रद्धांजलि को, समवेदना को वैसे तो सम्पूर्ण देश उनका परिवार है, जो भी उनके घर वाले या भाई होंगे, सदन की ओर से भिजवा दूंगा। अब हम दो मिनट मौन रह कर उनकी आत्मा की शान्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करेंगे।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट के लिए मौन खड़े हुए।)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

भूतपूर्व सदस्य, श्री बंश गोपाल शुक्ल, श्री रामजी, डाक्टर पद्मपत सिंघानिया, डाक्टर हरि प्रसाद शाही तथा श्री राम स्वरूप यादव के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री बनारसी दास)---

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, काल की नदी अबाध गति से बहती जा रही है। जब सदन पिछली बार स्थगित हुआ था, उसके बाद से अब तक इस सदन के 5 माननीय सदस्य, जिन्होंने इस सदन की सेवा की, हमारे बीच नहीं रहे ।

श्री बंश गोपाल शुक्ल, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का जन्म उन्नाव में हुआ था और शुरू से ही वे देश को आजादी दिलाने में लीन रहे। उनमें देश को आजाद कराने की भावना बहुत प्रबल थी। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में बड़ा सक्रिय भाग लिया। यहाँ पर लखनऊ में आये और स्थायी रूप से रहने लगे और यहाँ के वे प्रतिष्ठित समाजसेवी थे। यहाँ की दलित जनता की सेवा में वह विशेष रुचि रखते थे। सन् 1969 के मध्यावधि चुनाव में वे भारतीय क्रान्ति दल की ओर से निर्वाचित हुए और 5 साल तक उन्होंने इस सदन की सेवा की। वह अत्यन्त ही विनोदप्रिय थे और वे सभी लोगों के प्रिय थे। लखनऊ का कोई भी नागरिक ऐसा न होगा जो उनके यहाँ जाता हो और प्रेम से वंचित रह जाता हो। वह उनकी सेवा करते थे। वह बहुत सी सामाजिक और शिक्षण संस्थाओं से संबंधित थे।

दूसरे विधान सभा के सदस्य स्वर्गीय राम जी, जिन्होंने बिजनौर में सन् 1909 में जन्म लिया था। वह स्वतंत्रता संग्राम के एक महान सेनानी थे। बिजनौर जिला कांग्रेस कमेटी के महामन्त्री थे और सन् 1962 में आप इस आदरणीय सदन में जनसंघ के टिकट पर सदस्य निर्वाचित हुए थे। यह हलदौर नगर क्षेत्र समिति के काफी समय तक सदस्य रहे। गांधी जी ने जब अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन शुरू किया तो स्वर्गीय रामजी ने उसमें प्रमुख भाग लिया। उनके निधन से बिजनौर में एक बहुत कमी हो गयी है।

तीसरे डा0 पद्मपत सिंघानिया इस प्रदेश के प्रमुख उद्योगपति थे। वह 1937 से 1938 तक तथा जब हमारे देश में विधान निर्मात्री सभा बनी तो उसके सदस्य रहे । श्री पद्मपत सिंघानिया ने इस प्रदेश में औद्योगीकरण को प्रोत्साहन दिया। शिक्षा में उनकी बड़ी रुचि थी, जे0 के0 इंस्टीट्यूट आफ सोशियोलाजी, लखनऊ के अन्दर, जे0 के0 इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइन्सेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और कानपुर में कैन्सर के भयंकर रोग का निवारण करने के लिए कैन्सर इन्स्टीट्यूट की स्थापना की और एक मेडिसिन का इन्स्टीट्यूट भी कायम किया। कानपुर में उन्होंने एक बहुत बड़े मन्दिर की स्थापना की। वहाँ पर आपने चैम्बर आफ कामर्स की भी स्थापना की। उनका निधन 18 नवम्बर, 1979 को हुआ। उनके निधन से प्रदेश के औद्योगिक और सामाजिक क्षत्र में एक बड़ी क्षति हो गयी है । उनके प्रति मैं अपनी ओर से और सद[illegible]ओर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

डाक्टर हरि प्रसाद शाही का गोरखपुर के जन-जीवन से बड़ा ही घनिष्ट सम्बन्ध था। वे गोरखपुर विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर थे। सन् 1979 के मध्यावधि चुनाव में आप काँग्रेस टिकट पर यहाँ के लिए निर्वाचित हुए। डाक्टर शाही गोरखपुर के सामाजिक जीवन में बड़ा ही सक्रिय भाग लेते थे। उन्होंने हिन्दी के एक दैनिक पत्र की स्थापना की थी। डाक्टर शाही वर्ष 1963 में जब वे राजनीति में आए, जिला परिषद् के अध्यक्ष रहे। वर्ष 1969 में विधान सभा में चुन कर आए। वर्ष 1974 से 1977 तक वे दुबारा जिला परिषद् के अध्यक्ष रहे। 25 नवम्बर, 1979 को लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में उनका देहावसान हो गया। वे प्रायः पूर्वांचल की उन्नति के लिए गोष्ठियों का आयोजन करते थे। उनका सम्बन्ध सांस्कृतिक, सामाजिक और बहुत सी संस्थाओं के

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री बनारसी दास]

साथ में था। उनकी विशेषतौर से रुचि हिन्दी पत्रकारिता में थी। उनके निधन से प्रदेश को बड़ी क्षति हुई है ।

श्री राम स्वरूप यादव की दुखद मृत्यु लखनऊ के अन्दर 3 दिसम्बर, 1979 को हुई। वे इस समय विधान परिषद् के सदस्य थे। वे वर्ष 1976 में निर्वाचित हो कर आये थे। वे विधान परिषद् की समिति में भाग लेने आए थे। दुर्भाग्य से बस से टकरा कर उनका शरीरान्त हो गया। उनका जन्म एटा जिले की तहसील शिकोहाबाद में हुआ था। उनकी रुचि सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में थी। वे जिला परिषद्, मैनपुरी के सदस्य और अध्यक्ष भी रहे थे। वर्ष 1957 में वे पहली बार विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे प्रदेश के संसदीय सचिव व उप मन्त्री भी रहे। वे बड़े शान्त, मौन और स्थिर प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और जन सेवा करने में विशेष रुचि से आनन्द लेते थे वे जिला एटा के सरकारी वकील भी रहे ।

मैं इन पाँचों व्यक्तियों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि आप इस सदन की समवेदना की भावनायें उनके सन्तप्त परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री राज मंगल पाँडेय (जिला देवरिया)---

मान्यवर, मैं नेता सदन की भावनाओं से अपने को और अपने दल के सभी माननीय सदस्यों को सम्बद्ध करते हुए मुझे इस बात का गहरा दुख है कि पिछली बार सदन के स्थगित हो जाने के बाद जिस प्रकार से काल चक्र बड़ी तेजी से घूमता रहा है कि 5 सदस्य, जो भिन्न-भिन्न अवसरों पर इस सदन की गरिमा को बढ़ाते रहे हैं, वे हमारे बीच में नहीं रहे। इसी शहर लखनऊ के पूर्वी क्षेत्र से निर्वाचित श्री वंश गोपाल जो बड़े ही समाजसेवी थे, नहीं रहे। 1969 के मध्यावधि चुनाव में इस विधान सभा में चुन कर आये थे और 1974 तक वे इस सदन के सदस्य रहे। लम्बी बीमारी के बाद वे इस संसार से चल बसे और हमारे बीच नहीं रहे। लेकिन उनकी समाज सेवा लखनऊ के अन्दर सदैव खटकती रहेगी। आप से अनुरोध है कि आप हमारी भावनाएं उनके सन्तप्त परिवार तक पहुंचा दें।

दूसरे सदस्य श्री राम जी है, जो हमारे बीच नहीं रहे। वे साँस के रोग से ग्रसित थे। वे 1962 के सामान्य निर्वाचन में विधान सभा में जनसंघ टिकट पर चुन कर आए थे। वे नजीबाबाद निर्वाचन क्षेत्र से चुन कर आए थे और 1967 तक विधान सभा के सदस्य रहे। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में उन्होंने काफी हिस्सा लिया। उस समय वे नगर काँग्रेस कमेटी क मन्त्री तथा जिला काँग्रेस कमेटी के सदस्य भी रह चुके थे। वे एक जाने-माने समाज सेवक थे। 1937–1947 तक वह जिला परिषद् के सदस्य तथा लगभग 20 वर्षों तक नगर क्षेत्र समिति, हल्दौर के सदस्य रहे अपनी समाज सेवा के कारण वे बिजनौर के आस-पास के जिलों में बहुत वर्षों तक याद रहेंगे ।

तीसरे सदस्य डाक्टर पद्मपत सिंघानिया हैं, जो हमारे बीच नहीं रहे। वे इस विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य और भारतवर्ष की संविधान सभा के सदस्य तथा देश के एक प्रमुख उद्योग-पति रह चुके थे। उद्योगपति होने के बावजूद उन्होंने जिस हद तक समाजसेवा की थी वह सदा याद रहेगी और हमारे अन्य उद्योगपति उससे सबक लेते रहेंगे। शिक्षा जगत में भी उन्होंने बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है। वे ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मर्चेन्ट चम्बर आफ कामर्स की स्थापना की थी। शिक्षा जगत में और समाज में जो उन्होंने सेवा की है वह सदा याद रहेगी और लोगों को प्रेरणा देती रहेगी। मैं आपके माध्यम से प्रार्थना करूंगा कि हमारी समवेदनायें आप उनके सन्तप्त परिवार तक भेजने की कृपा करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

डाक्टर हरि प्रसाद शाही के निधन से भी हमारे प्रदेश की बड़ी क्षति हुई है। हमें खेद है कि आज वे भी हमारे बीच से उठ गये उनके निधन से हमने एक शिक्षा शास्त्री, पत्रकार व समाजसेवक खो दिया है। 20–22 वर्षों तक शिक्षा जगत में वे सेवा करते रहे। बे गोरखपुर विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर तथा चीफ प्राक्टर यूनिवर्सिटी कोर्ट के सदस्य एवं कार्यकारिणी के सदस्य रह चुके हैं। वे कई शिक्षा संस्थाओं के संस्थापक भी रहे। जो छाप उन्होंन गोरखपुर विश्वविद्यालय में अपनी छोड़ी है वह बात ही कम लोग छोड़ पायेंगे। गोरखपुर में उन्होंने एक हिन्दी दैनिक पत्र भी निकाला था और जब तक वे जीवित रहे तब तक वह निकलता रहा, लेकिन उनके बाद वह बन्द हो गया। इसी से सिद्ध होता है कि उनकी कितनी छाप थी। हमारी भावनाएं आप उनके सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

स्वर्गीय श्री रामस्वरूप यादव जी भी आज हमारे बीच में नहीं रहे। दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण यकाएक उनकी मृत्यु हो गयी। वह अपने पीछे एक सन्तप्त परिवार छोड़ गये हैं। वे सरकारी वकील भी थे। एटा में वकालत करते थे। बहुत सी शिक्षा संस्थाओं से भी उनका गहरा सम्बन्ध था। गाँव सभा से लेकर ब्लाक स्तर तक जो समाज सेवा का कार्य उन्होंने किया वह बड़ा ही सराहनीय रहा है। हमारी समवेदना आप उनके भी परिवार तक पहुंचानेकी कृपा करें।

मान्यवर, पाँचों दिवंगत आत्माओं के प्रति माननीय नेता सदन ने जो भावनाएं व्यक्त की हैं उनसे मैं भी अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। आप हमारी भावनाएं सभी सन्तप्त परिवारों को भेजने की कृपा करें।

*श्री गुलाब सेहरा (जिला आगरा)---

श्रीमन्, यह अत्यन्त दुख का विषय है कि आज यह सदन प्रारम्भ में ही पाँच भूतपूर्व सदस्यों के निधन पर अपने विचार व्यक्त कर रहा है। पुरानी पीढ़ी के लोग इस तरह से जाने लगते है तो बड़ा दुख होता है।

मैं समझता हूं कि हमारे 5 माननीय सदस्यों का निधन पिछले अक्तूबर-नवम्बर के महीने में हुआ है। लखनऊ से निर्वाचित बड़े मधुरभाषी और व्यवहार कुशल श्री बंश गोपाल शुक्ल जी अब हमारे बीच में नहीं रहे। स्वतंत्रता संग्राम में उनका पूरा योगदान था, वे हमसे विछुड़ गये। उन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई में अपना योगदान दिया था। लखनऊ के राजनैतिक और सामाजिक जीवन में उनको सदैव स्मरण किया जायगा।

हमारे दूसरे सदस्य श्री रामजी जो इस सदन में 1962 में नजीबाबाद से चुनकर आए थे, वह भी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे। उन्होंने भी आजादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया था। वे भी आज हमारे बीच में नहीं रहे। व बिजनौर में नगर कांग्रेस कमेटी के मन्त्री, जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य और जिला परिषद् के भी सदस्य रहे और वहाँ के सामाजिक जीवन में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान था। वे भी हमारे बीच नहीं रहे।

तीसरे सदस्य, भारतवर्ष की संविधान सभा और इस सदन के सदस्य डाक्टर पद्मपत सिंघानिया, देश के प्रमुख उद्योगपति कला प्रेमी और जे0 के0प्रतिष्ठान के अध्यक्ष थे। उनका शिक्षा जगत में भी बहुत योगदान रहा और वह धार्मिक प्रकृति के भी थे। सामाजिक सेवाओं में उनके द्वारा स्थापित मनोहर इंस्टीट्यूट आफ कानपुरऔर आई0टी0 आई0 के वे अध्यक्ष भी रहे। इसके अतिरिक्त चिकित्सा जगत में इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालाजी कानपुर के बोर्ड आफ गवर्नर्स के अध्यक्ष भी रहे। इसके अतिरिक्त जे0 के0 इंस्टीट्यूट आफ रेडियोलाजी एण्ड केन्सर रिसर्च नामक अस्पताल की स्थापना भी उन्होंने किया। इसके

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री गुलाब सेहरा]

अलावा दूसरे कई अस्पताल, इन्स्टीट्यूट आफ मेडिसिन तथा कई इंस्टीट्यूशन्स, कानपुर और जयपुर में स्थापित किए। चिकित्सा जगत के लिए उन्होंने एक इंस्टीट्यूट आफ कार्डियालोजी की स्थापना भी की। आपने कानपुर नगर में "श्याम हरी सिंघानिया आर्ट गैलरी" नामक कला बीथिका की स्थापना की। धार्मिक प्रकृति के कारण उन्होंने श्री राम मन्दिर की स्थापना की थी। आज उनके निधन से, एक उद्योगपति, एक चिकित्सा जगत का अच्छा काम करने वाला व्यक्ति, कला प्रेमी हमारे बीच में नहीं रहा।

हमारे चौथे सदस्य, डाक्टर हरि प्रसाद शाही, जो शिक्षा जगत में एक जाने माने प्रोफेसर रह चुके हैं और इस सदन के माननीय सदस्य भी रहे, हमारे बीच में नहीं रहे।

पाँचवें सदस्य, श्री रामस्वरूप यादव, जो वर्तमान समय में विधान परिषद् के सदस्य थे, सुबह तेजी में आती बस के नीचे आकर उनका आकस्मिक निधन हो गया। 1962 और 1957 में वह मन्त्रि मंडल के सदस्य भी रहे और एटा जिले के मशहूर वकीलों में से थे और वह काफी दिनों तक सरकारी वकील भी रहे और उनका एटा के राजनैतिक जीवन में, सामाजिक जीवन में बड़ा योगदान रहा। मैं इन पाँचों सदस्यों के प्रति जो भावनाएं नेता सदन और विरोधी दल के नेता ने व्यक्त की हैं, अपने दल को और अपने आपको सम्बद्ध करता हूं और आपसे आशा करता हूं कि आप इन पाँचों भूतपूर्व सदस्यों के सन्तप्त परिवारों को हमारी समवेदना पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री ऊदल (जिला वाराणसी)--

मान्यवर, स्वर्गीय वंश गोपाल शुक्ल जी, स्वर्गीय श्री रामजी, स्वर्गीय डाक्टर पद्मपत सिंघानिया, स्वर्गीय श्री राम स्वरूप यादव एवं स्वर्गीय डाक्टर हरि प्रसाद शाही जिनके बारे में जो नेता सदन, नेता विरोधी दल और माननीय गुलाब सेहरा ने विचार व्यक्त किए हैं, उनके साथ में अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि आप उनके सन्तप्त परिवार को हमारी संवेदना पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री लक्ष्मी शंकर यादव (जिला जौनपुर)—

मान्यवर, हमारे भूतपूर्व पाँच सदस्यों के निधन के प्रति जो पूर्व में माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार प्रकट किए हैं उनसे मैं, अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। श्री वंश गोपाल शुक्ल स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे और लोकप्रिय थे। वे उन्नाव में पैदा हुए थे और कुछ दिनों से लखनऊ में आकर रहने लगे थे। लोकप्रियता के नाते वह सन् 1969 में चुनकर इस विधान सभा के सदस्य के रूप में आये। वे बड़े सरल, बड़े सीधे और बड़े व्यवहार कुशल थे। जहाँ भी रहे लखनऊ और उन्नाव में इनका लोग बड़ा सम्मान करते थे।

श्री रामजी, बिजनौर के जिस भी क्षेत्र में रहे और जिस कमेटी में रहे बड़ी निष्ठा के साथ अपने कर्त्तव्यों का पालन किया। श्री पद्मपत सिंघानिया जी ने जहाँ प्रदेश में उद्योगों को बढ़ाया, उद्योगीकरण किया उससे प्रदेश को लाभ हुआ, उनका कार्य सराहनीय रहा है। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में उनका बड़ा योगदान रहा है। शिक्षा और चिकित्सा क्षेत्र में उनका जैसा योगदान रहा उससे सही माने में उद्योगपतियों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए जिससे गरीबों को बहुत लाभ हो जाया करता था। उनके निधन से इन तमाम क्षेत्रों में क्षति हुई है।

डाक्टर हरि प्रसाद शाही जी गोरखपुर के निवासी थे, शिक्षा के क्षेत्र में बड़े विद्वान् थे और सक्रिय थे। वे एक बड़े विचारक थे और बड़े व्यवहार कुशल और सरल थे। शिक्षा

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

क्षेत्र में और पत्रकारिता में उनके मृत्यु के बाद खासतौर से पूर्वांचल में बहुत बड़ी कमी आई है। वह कई स्थानों पर उत्तर प्रदेश राज्य जनपद के अध्यक्ष रहे फाइनेंस कारपोरेशन के उपाध्यक्ष भी रह चुके थे। बड़े योग्य और विद्वान थे। श्री राम स्वरूप यादव जो अभी थोड़े दिन पहले विधान परिषद् के सदस्य रहे। दो बार चुन कर आये थे इस विधान सभा में 1957 व 1967 में। वे सभा सचिव और उप मन्त्री के पद पर रहे हैं। बड़े गम्भीर और बहुत सरल व बड़े योग्य व्यक्ति थे और जहाँ भी जिस काम पर रहे बड़ी योग्यता और निष्ठा के साथ वहाँ पर उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया।

इन तमाम महान आत्माओं के प्रति, जो पूर्व में हमारे विधान सभा के सदस्य रहे हैं, उनके निधन से इस प्रदेश का और खासतौर से उस क्षेत्र का जहाँ के वह निवासी रहे उनकी विशेष क्षति हुई है। मैं अपने को और अपने दल की तरफ से इन तमाम लोगों की आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि उनके शोक सन्तप्त परिवार तक मेरी श्रद्धांजलि भेजने की कृपा करें।

श्री राम आसरे वर्मा (जिला हरदोई)--

सदन के भूतपूर्व सभी सदस्यों श्री वंश गोपाल शुक्ल, श्री पद्मपत सिंघानिया, डाक्टर हरि प्रसाद शाही तथा श्री रामस्वरूप यादव, श्री राम जी के प्रति माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल, माननीय गुलाब सेहरा जी, माननीय ऊदल जी तथा माननीय यादव जी ने जो श्रद्धांजलियाँ अर्पित की हैं, मैं अपने को और अपने प्रगतिशील विधायक दल को उन से सम्बद्ध करते हुए आपसे अपेक्षा करूंगा कि मेरी ओर से भी श्रद्धांजलि शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

***श्री रियासत हुसैन (जिला मुरादाबाद)--**

श्रीमन्, स्वर्गीय श्री वंश गोपाल शुक्ल, श्री राम जी, डाक्टर पद्मपत सिंघानिया, डाक्टर हरि प्रसाद शाही तथा श्री रामस्वरूप यादव जी जो अब हमारे बीच नहीं रह, उनकी जो सेवायें थीं चाहे वह मुल्क को आजाद कराने के सम्बन्ध में और चाहे मुल्क को बनाने के सम्बन्ध में देश की राजनीति में जो भाग लिया और जो सेवाएं की, वे भुलाई नहीं जा सकती हैं। श्रीमन्, इस सम्बन्ध में माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार प्रकट किए हैं, उनसे मैं, अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और यह आशा करता हूं कि आप इस श्रद्धांजलि को शोक सन्तप्त परिवारों तक भेजने की कृपा करेंगे।

श्री उपाध्यक्ष --

स्वर्गीय श्री वंश गोपाल शुक्ल, श्री राम जी, डाक्टर पद्मपत सिंघानिया तथा डाक्टर हरि प्रसाद शाही और श्री रामस्वरूप यादव जो माननीय सदन के सदस्य रहे, इनके बारे में जो समवेदना माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, श्री गुलाब सेहरा, श्री लक्ष्मी शंकर यादव जी, श्री राम आसरे वर्मा तथा श्री रियासत हुसैन ने प्रकट की हैं और उनकी जीवनी के ऊपर, उनके कार्यों के ऊपर और उनकी कुर्बानी के ऊपर जो विचार व्यक्त किए हैं, मैं अपने को और इस सदन के माननीय सदस्यों को उससे सम्बद्ध करता हूं और यह शोक सन्देश उनके सन्तप्त परिवार तक इस माननीय सदन की ओर से भेज दिया जायगा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि इन मृत आत्माओं की शान्ति के लिए दो मिनट खड़े होकर ईश्वर से प्रार्थना करें।

(सभी सदस्य अपने अपने स्थान पर दो मिनट के लिए मौन खड़े हुए।)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सदन के कल स्थगित करने की सूचना

श्री उपाध्यक्ष—

जसा माननीय नेता सदन ने कहा था कि कल 24 तारीख को सदन का उपवेशन नहीं होगा और हम इस तहत आज का शेष कार्यक्रम स्थगित करते हैं। 25 तारीख को 11-00 बजे फिर बठेगें। कल 11 बजे कार्य मंत्रणा समिति की बैठक होगी जिसमें आगे के कार्यक्रम के ऊपर विचार होगा। अब हम उठते हैं और 25 तारीख को 11-00 बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन 1 बजकर 40 मिनट पर शुक्रवार, 25 जनवरी, 1980 के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

लखनऊः
23 जनवरी, 1980।

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

विधान सभा उत्तर प्रदेश

नत्थी 'क'

(देखिये पीछे पृष्ठ 6 पर)

माननीय सदस्यगण,

नव वर्ष के प्रथम सत्र के अवसर पर एकत्र आप लोगों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं। विगत 8 अक्तूबर, 1979 को काल के क्रूर हाथों ने हमारे मध्य से लोकनायक श्री जय प्रकाश नारायण को छीन लिया। आदरणीय लोकनायक एक महान स्वतंत्रता सेनानी तथा युगद्रष्टा थे। वह सम्पूर्ण जीवन माननीय अधिकारों के लिये लड़ते रहे। लोकतंत्र में उनकी अटूट आस्था थी। सत्ता का लोभ उन्हें कभी स्पर्श नहीं कर सका। प्राचीन भारतीय ऋषियों की परम्परा में वह राष्ट्रपिता के समान सत्ता पर नैतिक नियंत्रण रखना चाहते थे। उन्होंने सदैव राज्य सत्ता और जनता के बीच एक सेतु का कार्य किया। उनकी मृत्यु से हुई क्षति की पूर्ति करना असंभव होगा। मैं उस महान् युगपुरुष के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

2—वर्ष 1979 में हमारे प्रदेश को पहिले बाढ़ तथा बाद में शताब्दी के अभूतपूर्व सूखे की स्थिति का सामना करना पड़ा। इन दैवी आपदाओं के कारण 1,081 करोड़ रुपये की अनुमानित क्षति हुयी है। मुझे हर्ष है कि मेरी सरकार अपने अथक प्रयासों से इस विषम स्थिति का सामना करने में सफल रही। सूखे की स्थिति को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा उन सभी कृषकों से लगान, एवं लगान की भांति वसूल किये जाने वाले कृषि संबंधी अन्य देयों की वसूली को स्थगित कर दिया गया है, जिनकी जोतों को 50 प्रतिशत से अधिक क्षति हुई है। सरकार द्वारा 20,000 मेट्रिक टन गेहूं असहाय एवं निराश्रित लोगों में निःशुल्क वितरण हेतु आवंटित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त 33,500 मेट्रिक टन खाद्यान्न तथा 600 मेट्रिक टन दुग्ध चूर्ण और सोयाबीन का खाद्य तेल भारत सरकार द्वारा वितरण हेतु आवंटित किया गया। तकावी ऋणों के वितरण के लिये भी पिछले वर्ष की अपेक्षा चार गुने से अधिक प्राविधान किया गया है। चालू वित्तीय वर्ष में सहायता कार्य हेतु 8.18 करोड़ रुपये आवंटित किये जा चुके हैं। भारत सरकार ने वतमान वित्तीय वर्ष में बाढ़ तथा सूखा सहायता कार्य हेतु आयोजनागत व्यय के लिए 31 करोड़ 21 लाख रुपया एडवांस प्लान सहायता की स्वीकृति भी दी है। यह भी निर्णय लिया गया है कि जिन कृषकों की दो से चार हेक्टेयर तक जोत है उनको लघु सिंचाई कार्यों हेतु ऋण का 20 प्रतिशत अनुदान दिया जाय। जिन छोटी जोत वाले कृषकों को बैंकों से ऋण उपलब्ध नहीं होता है उन्हें स्थानीय विकास योजना के अन्तर्गत ऋण देने की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है।

3—वर्ष 1979 में सूखे के कारण रबी की बुवाई समय पर नहीं हो पाई किन्तु नवम्बर के अन्त तथा दिसम्बर के प्रथम पक्ष में कुछ वर्षा होने पर यह बुवाई देर से सम्भव हो सकी। सूखे से प्रभावित क्षेत्रों में लघु तथा सीमाँत कृषकों की सहायता हेतु नेत्रजन, फास्फेट, पोटाश वाले उवरकों और कीटनाशक औषधियों पर क्रमशः 25 तथा 33 1/3 प्रतिशत की दर से अनुदान दिया गया। इस वर्ष प्रथम बार अनुसूचित जनजाति के कृषकों को उपरोक्त प्रयोजनों के लिए 50 प्रतिशत की दर से अनुदान दिया गया है। साथ ही अन्य कृषकों को फास्फेटिक एवं पोटाशिक उर्वरकों पर 20 प्रतिशत अनुदान दिये जाने की व्यवस्था की गई है।

4—कृषकों को राहत पहुंचाने हेतु अधिक से अधिक सिंचाई की सुविधा उपलब्ध करायी गयी और राजकीय साधनों से खरीफ में लगभग 24 लाख हेक्टेयर क्षेत्र म सिंचाई की गयी जो एक कीर्तिमान है। बुन्देनखण्ड तथा बघेलखंड क्षेत्रों मे जल की उपलब्धता सर्वथा कम रही है। इन क्षेत्रों में कई बड़ी सिंचाई योजनायें प्रारम्भ की गयी हैं। बुन्देलखंड क्षेत्र में चालू वित्तीय वर्ष में 100 नलकूपों के निर्माण की विशेष व्यवस्था की

है। गंडक समादेश क्षेत्र में 250 संवर्धन नलकूप लगाने की परियोजना भी स्वीकृत की गयी है।

5—ग्रामीण अंचलों में रहने वाले समाज के निर्बल एवं निर्धन वर्ग की दशा को सुधारने के लिए मरी सरकार ने 2 अक्टूबर, 1978 से प्रदेशव्यापी अन्त्योदय कार्यक्रम आरम्भ किया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले सबसे अधिक गरीब पाँच लाख से अधिक व्यक्तियों का चयन कर इनके परिवारों को विभिन्न कार्यों के लिए ऋण एवं अनुदान दिये जाने की योजना चलायी गयी है। इसके अन्तर्गत 5,000 रुपये तक ऋण चार प्रतिशत के नाममात्र ब्याज पर दिया जाता है। गरीब परिवारों को लाभ पहुंचाने की दृष्टि से यह योजनाएं स्थानीय रूप से गाँव सभाओं द्वारा बनायी जाती हैं। अब तक 1,25,000 परिवार इस योजना के अन्तर्गत लाभान्वित हो चुके हैं। इस योजना का और अधिक विस्तार किया जायगा। अन्त्योदय परिवार के सदस्यों द्वारा निष्पादित होने वाले 5,000 रुपये तक के ऋण संबंधी लेख पत्रों को स्टाम्प शुल्क से मुक्त कर दिया गया है।

6—अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जातियों के कृषक श्रमिक, जो स्थायी रूप से गाँव में रहते है तथा भूमिहीन हैं, तथा निर्बल वर्ग के अन्य जातियों के सीमान्त कृषकों को, अनुदान के रूप में आवासीय गृह की सामग्री एवं अन्य सुविधायें उपलब्ध कराई जा रही है। निर्बल वर्ग के व्यक्तियों के लिए 50,000 आवासीय भवनों के निर्माण का कार्य भी प्रगति पर है। हरिजन एवं पिछड़े वर्ग के सदस्यों के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में पेय जल की सुविधा का सृजन तेजी से किया जा रहा है। अप्रत्याशित सूखे को देखते हुए ग्रामीण क्षत्रों में बेरोजगारी को रोकने के लिए सम्पक मार्ग एवं पुलियों का निर्माण किया जा रहा है। वर्ष 1979–80 में भारत सरकार से "श्रम के बदले खाद्यान्न योजना" के अन्तर्गत अब तक 4 लाख 28 हजार मेट्रिक टन खाद्यान्न का आवंटन हुआ है और इस समय 6 लाख 54 हजार श्रमिको को रोजगार दिया जा रहा है।

7—पर्वतीय क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए शासन विशेष रूप से प्रयत्नशील है। यह प्रयास किया जा रहा है कि छठी योजना की अवधि के अन्त तक इन क्षेत्रों के सभी अभाव-ग्रस्त गाँवों को पेय जल सुविधा उपलब्ध हो जाय। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में सड़कों के पुनर्निर्माण एवं सुधार, पुलों के निर्माण, हरिजन बस्तियों में विद्युतीकरण और पर्यटन विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पर्वतीय क्षेत्रों में मृक्षरण की गम्भीर समस्या को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है कि जलागम क्षेत्रों को छांटकर उनमें एकीकृत रूप से भूमि संरक्षण के कार्यक्रम चलाये जाय। इस उद्देश्य से "हिमालय क्षेत्र में समेकित भूमि संरक्षण एवं भूमि सर्वेक्षण" नामक योजना कार्यान्वित की जा रही है। इसके लिये विश्व बैंक से भी सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा हैं।

8—मेरी सरकार गाँव में विद्युतीकरण तथा नलकूपों और उद्योगों को अधिक से अधिक बिजली देने के लिये दृढ़ संकल्प है। इस वर्ष सूखे की विषम स्थिति के कारण बिजली की माँग बहुत बढ़ गई है। उधर अनावृष्टि के कारण जल विद्युत् के उत्पादन में भारी कमी आ गई। फिर भी सरकार द्वारा बिजली आपूर्ति का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। सूखे की स्थिति से निपटने के लिये किसानों को बिजली की आपूर्ति, शहरों तथा उद्योगों में बिजली की कटौती करके की जा रही है। साथ ही साथ सरकार इस बात के लिये भी प्रयत्नशील है कि जिन तापीय विद्युत् परियोजनाओं पर कार्य शुरू हो गया है उन्हें शीघ्र पूरा किया जाय ताकि बिजली की आपूर्ति में वृद्धि हो सके।

9—देश की और विशेषकर इस प्रदेश की बढ़ती हुई आबादी तथा बेरोजगार युवकों की संख्या को देखते हुए मेरी सरकार का यह मत है कि उसका एकमात्र उपाय स्वाव-लम्बन तथा गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित श्रम पर आधारित उद्योग-धंधों को प्रोत्साहित

करना है। अतः मेरी सरकार की औद्योगिक नीति विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है और ऐसे उद्योगों को विशेषकर प्रोत्साहन दिया जायेगा जो अधिकाधिक युवकों को रोजगार दे सकें। सरकार का यह प्रयास है कि लघु एवं ग्रामीण उद्योगों का अधिकाधिक विकास करके ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर प्रदान किये जायें। ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाया जाये और क्षेत्रीय असंतुलन को दूर किया जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में संवर्द्धन केन्द्रों का विस्तार किया जा रहा है। प्रदेश के हस्तशिल्प उद्योग, विशेष रूप से कालीन उद्योग, के विकास एवं गुणात्मक सुधार के लिये तथा निर्मित वस्तु के निर्यात के लिये प्रभावी कदम उठाये जा रहे हैं। वाराणसी में एक एयर कारगो काम्पलेक्स स्थापित किया गया है। कानपुर में भी इसी प्रकार का एक काम्पलेक्स स्थापित किया जायेगा। जिन वस्तुओं का उत्पादन लघु एवं कुटीर उद्योग नहीं कर सकते हैं उनका उत्पादन वृहत् एवं माध्यम उद्योगों के माध्यम से किया जायेगा। किन्तु यह उद्योग छोटे उद्योग के पूरक होंगे तथा बाजार में उनसे प्रतिद्वंदिता नहीं करेंगे।

10—मेरी सरकार द्वारा गन्ना कृषकों के हितों को दृष्टिगत रखते हुए चीनी मिलों से अधिक गन्ना मूल्य दिलाये जाने का पूर्ण प्रयास किया गया। सर्वप्रथम इस प्रदेश के गन्ना इतिहास में 23 करोड़ से अधिक रुपया सहायता अनुदान के रूप में दिया गया। मेरी सरकार के इन प्रयासों के फलस्वरूप इस वर्ष गन्ना किसानों को केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य से अधिक गन्ना मूल्य प्राप्त हो रहा है। यह मूल्य पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक है। गन्ना कृषकों के अवशेष गन्ना मूल्य के भुगतान हेतु विशेष प्रयास किये गये जिसके फलस्वरूप जून-नवम्बर, 1979 के मध्य लगभग 20 करोड़ रुपये अवशेष गन्ना मूल्य का भुगतान कराया गया जो अपने आप में एक विशेष उपलब्धि है। प्रदेश में इस समय 89 चीनी मिलें कार्यरत हैं जिनमें 49 चीनी मिलें सहकारी तथा सरकारी नियंत्रण में हैं। सरकारी नियंत्रण में अधिकांश चीनी मिलें पुरानी हैं और उनकी पिराई क्षमता बहुत कम है और आर्थिक दृष्टि से यह लाभप्रद भी नहीं हैं। मेरी सरकार द्वारा यह निश्चय किया गया है कि योजना बद्ध रूप से इन चीनी मिलों का आधुनिकीकरण एवं विस्तार किया जाय। इस उद्देश्य से पाँच चीनी मिलों की आधुनिकीकरण एवं विस्तार करने की व्यवस्था भी की जा रही है।

11—हथकरघा बुनकरों की आर्थिक उन्नति के लिये हमारी सरकार सतत प्रयत्नशील है। उपलब्ध हथकरघों की क्षमता का सम्पूर्ण उपयोग तथा उनके उत्पादन में गुणात्मक सुधार का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिये उनकी सहकारी समितियाँ सुदृढ़ की जा रही हैं। बुनकरों को उचित मूल्य पर धागा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सरकारी कताई मिलों की क्षमता का विस्तार कर तकुओं की वृद्धि की जा रही है।

12—प्राविधिक शिक्षा के क्षेत्र में उन्नतिशील टेक्नोलाजी का लाभ ग्रामीण जनता को पहुंचे, इस उद्देश्य से यह निश्चय किया गया है कि प्रत्येक बहुधंधी संस्था अपने आस-पास क्षेत्र के 5–7 गाँवों को अपनाकर ग्रामीण जनता को कृषि यंत्रो का उपयोग एवं मरम्मत, बिजली की मोटरों व मोटर गाड़ियों की मरम्मत, आदि में अल्पकालीन प्रशिक्षण दें। सरकार ने यह भी निश्चय किया है कि ग्रामीण क्षेत्र के अर्धशिक्षित तथा पिछड़े वर्ग के नवयुवकों को स्वतः रोजगार की ओर प्रेरित करने के लिये, प्रदेश की रोजगारी बहुधंधी संस्थाओं द्वारा अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाय।

13—संविधान के नीति निदेशक तत्वों के अनुकूल राज्य सरकार प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिय कटिबद्ध है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु शासन द्वारा प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की नीति अपनाई गई है। इसके अन्तर्गत आवास के डेढ़ किलोमीटर की परिधि के भीतर प्राथमिक विद्यालय तथा तीन किलोमीटर की परिधि में जूनियर स्कूल

खोलने की योजना को कार्यान्वित किया जा रहा है। इसके बावजूद जो बालक आर्थिक एवं सामाजिक कारणों से इस सुविधा का लाभ नहीं उठा पातें है उनके लिये शासन ने अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से शिक्षा देने का निर्णय लिया है। मेरी सरकार 6 से 14 वर्ष तक की आयु के बालकों, विशेषकर बालिकाओं के लिये, अंशकालिक कक्षाओं को खोलन की योजना पर विचार कर रही है। सूखे की विषम स्थिति को ध्यान म रखते हुए मरी सरकार द्वारा कक्षा 7 से विश्वविद्यालय स्तर तक की सभी कक्षाओं में पढ़ने वाले उन सभी छात्रों को मार्च 1980 तक शिक्षण शुल्क से मुक्त कर दिया गया है जिनके अभिभावकों को कृषि को 50 प्रतिशत या उससे अधिक नुकसान हुआ ह अथवा जिनके अभिभावक भूमिहीन खेतिहर मजदूर हैं। शिक्षण शुल्क की हानि की क्षतिपूर्ति हेतु चालू वित्तीय वर्ष में 2 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गई ह। इसके अतिरिक्त, इस वर्ष 190 मान्यता प्राप्त गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तथा 200 जूनियर हाई स्कूलों को अनुदान सूची में सम्मिलित करते हुए, उनके अध्यापकों तथा अन्य कमचारियों को वतन वितरण की सुविधा भी प्रदान किये जाने का निणय लिया गया है। मरी सरकार द्वारा अपनी त्रिभाषा नीति के अनुसरण में हिन्दी के साथ-साथ 25 प्रतिशत अंक संस्कृत के अध्ययन के लिये अनिवार्य रख गये हैं तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित अन्य भाषाओं में से, जिनमें उर्दू भी सम्मिलित है, एक आधुनिक भारतीय भाषा पढ़ना अनिवार्य कर दिया गया है। अंग्रेजी यथावत अनिवार्य रहेगी।

14——राष्ट्रीय प्रौढ़-शिक्षा के कार्यक्रम को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिये मैं, स्वैच्छिक संस्थाओं, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा नहरू युवक केन्द्रों से अपील करूंगा कि वे इस कार्यक्रम में आगे आ कर सशक्त नेतृत्व प्रदान करें।

15——मेरी सरकार इस समस्या से भलीभांति अवगत है कि प्रदेश के भीतर आर्थिक विषमताओं का बना रहना प्रदेश के लिये हितकर नहीं है। राज्य सरकार ने प्रदेश के पिछड़े क्षेत्रों की समस्याओं का अध्ययन कर समुचित समाधान निकालने के उद्देश्य से वित्त मंत्री की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति नियुक्त की है। आशा है कि इसकी संस्तुतियां शीघ्र प्राप्त हो जायेंगी। इसक अतिरिक्त योजना कार्यान्वयन में सुधार लाने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने एक अन्य समिति भी नियुक्त की है जो प्रशासनिक तथा वित्त प्रणाली में समुचित सुधार करने क संबंध में अपने सुझाव देगी। मुझे आशा है कि सरकार तथा जनता के प्रयासों से प्रदेश शीघ्र ही आर्थिक विकास की ओर तीव्र गति से अग्रसर होगा।

16——प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था में इधर उत्साह-वर्धक सुधार हुआ है। राज्य की आय में वर्ष 1978–79 में वार्षिक वृद्धि की दर 5.2 प्रतिशत रही। इसी प्रकार वष 1970–71 क स्थायी भावों के आधार पर प्रदेश में प्रत्येक व्यक्ति की आय, जो वर्ष 1976–77 में 479 रुपये थी, बढ़कर 1978–79 में 509 रुपये हो गयी।

17——इस तथ्य को देखते हुए कि भीषण सूखे के कारण वर्ष 1979 की खरीफ की फसल लगभग पूरी तरह से नष्ट हो गयी और धान का उत्पादन पिछल वर्ष की तुलना में एक तिहाई रह गया, मेरी सरकार ने यह निर्णय लिया है कि बड़ी मात्रा में चावल की खरीद न की जाय। फलस्वरूप चावल की लवी की मात्रा केवल 10 प्रतिशत रखी गयी। डीजल और मिट्टी के तेल वितरण को नियंत्रित करने के लिये भी यथासम्भव कदम उठाये जा रह ह। चीनी के उत्पादन में कमी होने के कारण खुल बाजार में उसका मूल्य काफी बढ़ गया। इसका सामना करने के लिए सस्ते गल्ले की दुकानों से निर्धारित मात्रा में चीनी उपलब्ध कराने के लिए प्रभावी कदम उठाये गये हैं और चीनी की वितरण व्यवस्था पुनः लागू की गयी है। चोर बाजारी और मुनाफाखोरी रोकने की दिशा में कुछ समय पूर्व केन्द्रीय सरकार ने एक अध्यादेश जारी किया था जिसका इस राज्य में स्वागत किया गया। यह हर्ष

का विषय है कि वर्तमान केन्द्रीय सरकार उक्त अध्यादेश को अधिनियमित करने जा रही है।

18—सहकारिता के माध्यम से कृषि ऋण, कृषि निवेशों की आपूर्ति, ग्रामीण गोदामों एवं शीतगृहों के निर्माण, खाद्यान्नों के क्रय-विक्रय तथा आवश्यक वस्तुओं का सार्वजनिक वितरण, आदि के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। छठी पंचवर्षीय योजना में 4,000 कृषक सहकारी समितियाँ बनाया जाना प्रस्तावित था जिनमें से वर्ष 1979–80 के अन्त तक 1,373 समितियों का गठन हो जायगा। मेरी सरकार इस बात के लिये प्रयत्नशील है कि आगामी वर्ष में लगभग एक हजार और ऐसी समितियाँ बन जायें। यह समितियाँ बीज और उर्वरक की आपूर्ति, मूल्य समर्थन योजना के अन्तर्गत खाद्यान्नों की खरीद आदि का कार्य करेंगी और सामान्य रूप से अपने क्षेत्र में "मिनी बैंक" के रूप में ऋण वितरण का कार्य भी करेंगी।

19—ग्रामीण क्षेत्र के अधिकाधिक निवासी गाँव सभाओं के निर्वाचन में भाग ले सकें, इस उद्देश्य से पंचायत राज अधिनियम, 1948 में संशोधन कर मतदाता की आयु को 21 वर्ष से घटा कर 18 वर्ष कर दिया गया है।

20—प्रदेश की आर्थिक उन्नति, ग्रामीण क्षेत्रों के बिकास पर निर्भर है। अतः मेरी सरकार अधिक से अधिक गाँवों को सम्पर्क मार्गों द्वारा पक्की सड़कों से जोड़ कर आवागमन की सुविधा देने के लिये प्रयत्नशील है। चालू वित्तीय वर्ष में नवम्बर, 1979 तक 10,000 किलोमीटर से अधिक सम्पर्क मार्गों का निर्माण हो चुका है। इसके अतिरिक्त सर्वसाधारण को उपलब्ध परिवहन सुविधाओं को सस्ता बनाने और बढ़ी हुई यातायात की आवश्यकताओं को देखते हुए कतिपय प्रकार की गाड़ियों को ठेला गाड़ी (मोटर कैब) के परमिट दिये जाने के लिये प्राधिकृत कर दिया गया है। अराष्ट्रीयकृत मार्गों पर यात्री गाड़ियों को उदारतापूर्वक परमिट दिये जाने का प्रश्न भी सरकार के विचाराधीन है। विकलाँगों को परिवहन निगम की बस सेवा में यात्रा करने के लिये पचास प्रतिशत की छूट दी गयी है। इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के उपलक्ष्य में 5 वर्ष तक की आयु के बच्चों की यात्रा निःशुल्क कर दी गयी है।

21—नगरों में कंपोस्ट प्लान्टस की स्थापना की योजना बनायी गयी है। कानपुर में एक ऐसा प्लान्ट स्थापित किया जा चुका है और अगले वर्ष तक 4 अन्य बड़े नगरों में भी यह स्थापित हो जायेंगे। इनकी स्थापना के लिये राज्य सरकार द्वारा 33 प्रतिशत का अंशदान दिया जा रहा है। इस वर्ष हरिद्वार के अर्ध-कुम्भ मेले में लगभग 40 लाख यात्रियों के भाग लेने की आशा है। इन यात्रियों की सुख सुविधा हेतु हर की पैड़ी में गंगा के घाट को चौड़ा किया जा रहा है, दो बाई पास रोड बनायी गयी हैं तथा एक नये पुल का निर्माण किया गया है।

22—मेरी सरकार सदैव इस बात के लिये प्रयत्नशील रही है कि औद्योगिक विवादों को यथासम्भव संराधन प्रक्रिया द्वारा तय कराया जाय और यदि विवाद उससे तय न हो सके तो उन्हें अभिनिर्णय के माध्यम से तय कराया जाय। बंधित श्रमिक प्रथा के उन्मूलन तथा बंधित श्रमिकों के पुनर्वासन के कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जा रहा है। मेरी सरकार के प्रयासों से औद्योगिक वातावरण में पर्याप्त सुधार हुआ है। वर्ष 1978 में नवम्बर माह तक 229 हड़तालें तथा तालाबन्दी हुई थीं और उससे हुए कार्य दिवसों की हानि 25.48 लाख थी। वर्ष 1979 में इस अवधि में केवल 160 हड़तालें तथा तलाबन्दी एवं 11.12 लाख कार्य दिवसों की हानि हुई।

23—बंदियों की चिकित्सा सुविधा में पर्याप्त सुधार किया जायगा। कारागारों में राजनैतिक बंदियों की एक श्रेणी सृजित करने तथा विभिन्न बन्दियों को उच्च, विशष और साधारण श्रेणी में वर्गीकृत करने का निर्णय लिया गया है।

24--स्टाम्प शुल्क की अपवंचना को रोकने के लिये सरकारद्वारा राष्ट्रीयकृत बैंकों, निगमों, सरकारी कम्पनियों आदि को भी सार्वजनिक कार्यालय घोषित करने के उद्देश्य से स्टाम्प अधिनियम में संशोधन करने के लिये एक विधेयक प्रस्तुत करने का प्रस्ताव है। लेख पत्रों के निबन्धन की वर्तमान प्रणाली में पाये गये दोषों तथा उससे हो रही परेशानी को दूर करने के प्रश्न पर भी सरकार सक्रियता से विचार कर रही है ।

25--प्रदेश के बड़े नगरों में, विशेषकर कानपुर में मलिन बस्तियों की समस्या अत्यन्त विकट है । इस समस्या के निराकरण हेतु शासन द्वारा कई योजनायें चलायी जा रही हैं । विश्व बैंक की सहायता से कानपुर नगर के विकास हेतु कई करोड़ रुपये की अनुमानित लागत का एक प्रोजेक्ट तैयार किया जा रहा है । इसके सम्बन्ध में विश्व बैंक मिशन की टीम के साथ विचार-विमर्श किया जा रहा है । प्रोजेक्ट के कार्यान्वियन से बड़ी संख्या में भू-खण्डों को विकसित किया जायगा तथा कानपुर नगर की मलिन बस्तियों के हजारों परिवार लाभान्वित होंगे ।

26--प्रदेश के दुग्धशाला विकास के कार्यक्रमों को तीव्र गति देने हेतु उसे सहकारी ढांचे पर आधारित कर लिया गया है इसे और सुदृढ़ किया जा रहा है। मत्स्य उद्योग को विकसित करने के लिए एक मत्स्य विकास निगम की स्थापना की जा रही है।

27--सीमित संसाधनों के बावजूद हमारी सरकार जन साधारण तथा विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों की जनता के लिये अधिकाधिक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिये प्रयत्नशील है । स्वास्थ्य बजट के निर्धारित परिव्यय का लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों पर व्यय किया जा रहा है। तात्कालिक चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिये प्रदेश में 542 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं की नियुक्ति की जा चुकी है । भारतीय चिकित्सा पद्धति तथा होम्योपैथी का भी पर्याप्त विकास किया जा रहा है। यह हर्ष का विषय ह कि हमारा प्रदेश महामारी से पूर्णतः मुक्त है ।

28--राष्ट्रीय वन नीति द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार हमारे प्रदेश में वनों का भौगोलिक क्षेत्रफल काफी कम है । इस कमी को मेरा करने के ध्येय से प्रदेश के मैदानी क्षेत्रों में विश्व बैंक की सहायता से एक "सामाजिक वानिकी परियोजना" कार्यान्वित की जा रही है । आगामी वर्षों में इसका और विस्तार किया जायेगा ।

29--मेरी सरकार प्रशासकीय तंत्र को और अधिक चुस्त तथा दक्ष बनाने के लिये प्रयत्नशील ह । सत्ता के विकेन्द्रीकरण की नीति के अन्तर्गत इस बात पर बल दिया जा रहा है कि अधिकारों का उच्च स्तर से निम्न स्तर पर अधिकाधिक प्रतिनिधान किया जाय ताकि प्रशासन जनता के अधिकाधिक निकट आये । विकेन्द्रीकरण की नीति के अनुसरण में जिला मुख्यालय पर तैनात परगनाधिकारियों को तहसील मुख्यालयों पर स्थानान्तरित कर दिया गया है । इस योजना के सफल क्रियान्वयन के लिये 20 करोड़ की लागत से अधिकारियों तथा उनसे संबद्ध कर्मचारियों के लिये तहसीलों पर कार्यालय तथा आवासिक भवनों के निर्माण हेतु योजना बनाई गई है ।

30--यह हर्ष का विषय है कि विगत वर्ष में विभिन्न कारणों से उत्पन्न तनावों के बावजूद प्रदेश के पुलिस अपराधियों तथा आसामाजिक तत्वों के विरुद्ध निष्पक्षता से कार्यवाही करते रहने के अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रही । देश के विभिन्न भागों में पुलिस जनों के बीच अशान्ति एवं अनुशासनहीनता का एक वातावरण उत्पन्न हुआ । यह गर्व की बात है कि प्रदेश की पुलिस इन उत्तेजनात्मक घटनाओं से विचलित नहीं हुई और अपने उत्तरदायित्व को अनुशासन और निष्ठा के साथ निभाती रही । साथ ही हमारी सरकार ने पुलिस जनों की सुख-सुविधा की ओर बराबर ध्यान दिया । अपराधों में कमी

लाने के लिये अपराधियों के विरुद्ध और अधिक सक्रियता से कानूनी कदम उठाये जा रहे हैं।

31—राज्य सरकार ने सरकारी कर्मचारियों तथा सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं और स्थानीय निकायों के कर्मचारियों के लिये एक-एक वेतन आयोग गठित किया है। इन दोनों आयोगों से अपेक्षा की गयी है कि वे अपनी संस्तुतियाँ 15 जुलाई, 1980 तक शासन को भेजें। शासन ने यह भी निर्णय लिया है कि विभिन्न निगमों के कर्मचारियों के वेतन आदि के प्रश्न को भी वेतन आयोग केविचार क्षेत्र में रखा जाय।

32—विगत सत्र में आपने छोटे-छोटे फौजदारी मुकदमों के शमन तथा उपशमन के संबंध में एक विधेयक पारित किया था, जिस पर राष्ट्रपति की अनुमति मिल गयी है। इसके कार्यान्वयन के फलस्वरूप बड़ी संख्या में छोटे-छोटे मामलों के मुकदमों का शीघ्र निस्तारण हो जायगा और लम्बित वादों की संख्या काफी कम हो जायेगी। लखनऊ में मोटर वेहिकिल्स ऐक्ट के अन्तर्गत लम्बित वादों के निस्तारण के लिये एक विशेष योजना चलायी गयी है। उसके अनुसार वादकारियों द्वारा नोटिस की प्राप्ति पर बिना न्यायालय जाये हुए ही जुर्माने की धनराशि भेजने या जमा करने पर मुकदमा समाप्त हो जाता है। इस योजना को वाराणसी, कानपुर, गोरखपुर, इलाहाबाद, आगरा, मेरठ व गाजियाबाद में भी लागू किया जा रहा है। बड़े जिलों में जहाँ कार्य अधिक है, फोटोकापियर मशीनें उपलब्ध की गयी हैं जिससे वादकारी जनता को सुविधा हो। भारत सरकार द्वारा उपलब्ध सहायता से 132 न्यायालयों की भी स्थापना की जा रही है। प्रदेश के कुछ जिलों मे वक्फ के सर्वेक्षण का कार्य पहले से चल रहा था। वर्ष 1979 में 12 अन्य जिलों में भी इस कार्य का विस्तार कर दिया गया है।

33—वर्तमान अधिवेशन एक अल्प अवधि के लिए बुलाया गया है। इस अवधि में कतिपय महत्वपूर्ण विधायी कार्य जैसे, उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय (संशोधन) विधेयक, 1980, उत्तर प्रदेश तेंदू पत्ता (व्यापार विनियमन) (संशोधन) विधेयक, 1980, उत्तर प्रदेश स्वायत्त शासन विधि (संशोधन) विधेयक, 1980, उत्तर प्रदेश मोटर गाड़ी कराधान (संशोधन) विधेयक, 1980, आदि को पारित करने की आप से अपेक्षा की जायगी।

34—माननीय सदस्यगण, हाल ही में देश में शान्तिपूर्ण ढंग से लोक सभा के चुनाव सम्पन्न हुए हैं। मैं उसके लिये चुनाव कार्य में रत पुलिस तथा अन्य सभी कर्मचारियों और जनता को बधाई देता हूं। मेरी सरकार का यह आदश एवं उद्देश्य है कि देश में लोकतांत्रिक परम्परा चिरस्थाई रहे। देश की स्वतंत्रता के लिये जो कुर्बानियाँ की गई और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की विचारधारा का जन-मानस पर जो संस्कार पड़ा उससे देश में लोकतांत्रिक परम्परा सुदृढ़ हुई। यह अत्यन्त संतोष का विषय है कि भारत के जन-मानस की बुद्धि अत्यन्त परिपक्व है और वृहत राष्ट्रीय हित में सूझ-बूझ के साथ निर्णय करती है। हाल ही में हुये आम चुनावों में जहाँ मतदाताओं ने केन्द्र में एक स्थिर सरकार दी वहाँ हमारे प्रदेश के मतदाताओं ने केन्द्र को एक सबल प्रतिपक्ष, जिसका प्रजातांत्रिक प्रणाली में अपना महत्व है, बनाने में योगदान दिया। मेरी सरकार का यह भी निश्चित मत है कि राजनैतिक क्षेत्र में लोकतंत्र के के आदर्शों को सुदृढ़ बनाये रखने के लिये प्रतिपक्ष की भूमिका भी अनिवार्य है। मेरी सरकार चुनाव में व्यक्त जनमत का आदर करती है। सीटों के आँकड़े तो एक साँख्यकीय पहेली है किन्तु संख्या से अधिक महत्व आदर्शों तथा भावनाओं का है। हमारी संस्कृति सहिष्णुता तथा विभिन्न विचार-धाराओं का समुचित आदर करने के सिद्धान्त पर आधारित है। चुनाव में हार-जीत की अपेक्षा देश का हित सर्वोपरि है। मेरी सरकार को पूर्ण आशा है कि प्रदेश के विकास के लिये वह केन्द्रीय सरकार से यथावत् सहयोग और सहायता पाती रहेगी।

35—माननीय सदस्यगण, आने वाला समय बडा कठिन है। मुझे आशा है कि आप सब कटिबद्ध होकर प्रदेश के सर्वांगीण विकास में अपेक्षित सहयोग प्रदान करेंगे। लोकतांत्रिक सिद्धान्तों में अटूट विश्वास के साथ जनता के प्रति अपने कर्त्तव्यों को तत्परता से निभाने में आप सफल हों, इसकी मैं कामना करता हूं।

जय हिन्द।

पी० एस० यू० पी०—एल० 466 विधान सभा (864)—1980—835।